रेत-समाधि उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

दर्शना मधु गांवकर

अनुक्रमांक: 22P0140010

PR Number: 201808543

मार्गदर्शक

ममता दीपक वेर्लेकर

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक: ममता दीपक वेर्लेकर

GOA UNIVERSITY SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE TALEIGAON PLATEAU

Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, "रेत समाधि उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन" is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Ms.Mamata Deepak Verlekar and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Darshana Madhu Gaonkar

22P0140010

Date: 18th April 2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report "रेत समाधि उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन" is a bonafide work carried out by Ms.Darshana Madhu Gaonkar under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Mamata Deepak Verlekar

GOA UNIVERSITY SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE TALEIGAON PLATEAU

Date: 18th April 2024

Signature of Dean of the School

School Stamp

Date: 18th April 2024

Place: Goa University

II

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय - ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

(Accredited by NAAC)

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA
Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/ 253

Date: 06/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Darshana Madhu Gaonkar, a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 32 Hours & 26 Minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Assistant Professor Ms. Mamata Deepak Verlekar.

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY LIBRARY GOA

VISITS TO THE GOA UNIVERSITY LIBRARY

SR. NO	DATE	TIME	HOURS
1.	20/06/2023	01:28-01:55	27 min
2.	22/06/2023	12:05-12:43	38 min
3.	27/06/2023	01:12-01:33	21 min
4.	17/07/2023	03:14-03:26	12 min
5.	20/07/2023	02:15-04:33	2 hours 19 min
6.	21/07/2023	04:08-04:55	47 min
7.	26/07/2023	04:33-05:05	32 min
8.	31/07/2023	03:17-05:28	2 hours 11 min
9.	02/08/2023	04:27-05:07	40 min
10.	07/08/2023	12:39-01:21	42 min
11.	07/08/2023	02:34-03:11	37 min
12.	16/08/2023	11:40-01:17	1 hours 37 min
13.	25/08/2023	03:15-03:51	36 min
14.	13/09/2023	11:51-01:55	2 hours 4 min
15.	27/09/2023	03:29-04:19	50 min
16.	29/09/2023	03:23-05:01	1 hours 38 min
17.	03/10/2023	01:57-03:01	1 hours 4 min
18.	06/10/2023	03:44-04:05	21 min
19.	30/10/2023	11:23-12:16	53 min
20.	03/01/2024	11:24-12:16	52 min
21.	04/01/2024	11:32-01:36	2 hours 4 min
22.	17/01/2024	11:16-11:30	14 min
23.	15/02/2024	11:48-12:03	15 min
24.	13/03/2024	11:46-12:44	58 min
25.	15/04/2024	12:03-01:20	1 hours 17 min
26.	18/04/2024	03:25-05:00	1 hours 35 min
27.	19/04/2024	10:25-05:07	6 hours 42 min
TOTAL HOURS			**32 hours 26 min**

Signature of the Guide
Asst. Prof. Ms. Mamata Deepak Verlekar

Signature of the University Librarian
Dr. Sandesh B. Dessai

Gaonkar
Signature of the Student
Miss Darshana Madhu Gaonkar

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	DECLARATION BY STUDENT	I
	COMPLETION CERTIFICATE	II
	कृतज्ञता	VII
1 प्रस्तावना	प्रस्तावना 1.1 प्रस्तावना 1.2 प्रासंगिकता 1.3 शोध उद्देश्य 1.4 साहित्यिक पुनर्विश्लेषण 1.5 कार्य प्रणाली 1.6 अध्याय विभाजन 1.7 गीतांजलि श्री के साहित्य पर उपलब्ध शोध सामग्री	2-11 2-5 5-8 8 8-9 9-10 10 10-11
2 गीतांजलि श्री का	गीतांजलि श्री का सामान्य परिचय 2.1 गीतांजलि श्री का परिचय 2.2 जन्म 2.3 शिक्षा	14-19 14 14 14

सामान्य परिचय	2.4 गीतांजलि श्री का परिवार 2.5 गीतांजलि श्री का कृतित्व 2.6 विविध क्षेत्रों में कार्य 2.7 फ़ैलोशिप 2.8 सम्मान 2.9 गीतांजलि श्री के साहित्य की विशेषताएं	15 15-17 17 17 17-18 18-19
3 गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत-समाधि' की कथावस्तु एवं पात्रों का चरित्र चित्रण	गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत-समाधि' की कथावस्तु एवं पात्रों का चरित्र चित्रण 3.1 कथावस्तु 3.2 पात्रों का चरित्र चित्रण	22-62 22-50 50-62
4 'रेत समाधि' उपन्यास का	'रेत समाधि' उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन 4.1 'रेत समाधि'में चित्रित विभिन्न समस्याएं 4.1.1 संयुक्त परिवार का टूटना 4.1.2 वृद्धों की स्थिति	65-87 65-79 65-66 66-67

समीक्षात्मक अध्ययन	4.1.3 किन्नरों के प्रति लोगों का दृष्टिकोण	67-70
	4.1.4 पितृसत्तात्मक समाज	70-73
	4.1.5 सांप्रदायिकता	73-75
	4.1.6 विभाजन की त्रासदी	75-77
	4.1.7 प्रकृति	77-78
	4.1.8 मां-बेटी का प्यार	78-79
	4.2 भाषा	79-80
	4.2.1 उर्दू शब्द	79-80
	4.2.2 अंग्रेज़ी शब्द	80
	4.3 शैली	80-84
	4.3.1 वर्णनात्मक शैली	80-81
	4.3.2 फ्लैशबैक शैली	81-82
	4.3.3 काव्यात्मक शैली	82
	4.3.4 संवादात्मक शैली	82-83
	4.3.5 व्यंग्यात्मक शैली	83-84
	4.5 शिल्प	85-86
	4.6 प्रासंगिकता	86-87

5 निष्कर्ष एवं शोध संभावनाएं	निष्कर्ष एवं शोध संभावनाएं	90-94
	संदर्भ सूची	96-98

कृतज्ञता

'रेत समाधि' उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर लघु शोध प्रबंध पूरा करते हुए पहले तो मैं ईश्वर के प्रति बहुत आभारी हूं जिसने मुझे यह पूरा करने की क्षमता दी। मैं लेखिका गीतांजलि श्री की आभारी हूं जिन्होंने इस उत्कृष्ट कृति की रचना की। इस विषय को पूरा करना संभव नहीं था यदि मुझे किसी का उत्तम मार्गदर्शन नहीं मिला होता। यह लघु शोध पूरा करने में शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक ममता दीपक वेर्लेकर जी के सहयोग के लिए मैं उनकी आभारी हूं। उन्होंने विषय चयन करने में मेरी सहायता की, मुझे जिन किताबों की आवश्यकता थी वे किताबें उपलब्ध करवा दी और समय-समय पर मार्गदर्शन किया।

शणै गोंयबाब भाषा एवं साहित्य महाशाला हिंदी अध्ययन शाखा की मैं आभारी हूं। मेरे परिवार वालों एवं मेरे दोस्तों ने कदम-कदम पर मेरा पथ-प्रदर्शन किया, उनको मैं धन्यवाद देती हूं।

इसके अतिरिक्त गोवा विश्वविद्यालय के ग्रंथालय का मुझे पूरा सहयोग मिला। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मेरी सहायता करने के लिए श्रद्धावान होकर मैं सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूं।

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय:- प्रस्तावना

1.1 प्रस्तावना

'रेत-समाधि' यह उपन्यास लेखिका गीतांजलि श्री द्वारा लिखित है । इस उपन्यास का प्रकाशन 2018 में हुआ । गीतांजलि श्री के द्वारा लिखित 'रेत-समाधि' उपन्यास का अंग्रेज़ी में अनुवाद 'टूम ऑफ सैंड' से डेजी रॉकवेल द्वारा किया गया है जिसके लिए इस उपन्यास को 26 अप्रैल 2022 में अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिला है । 'रेत-समाधि' हिंदी का पहला उपन्यास है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बुकर पुरस्कार प्राप्त हुआ है । गीतांजलि श्री हिंदी की एक जानी-मानी कथाकार एवं उपन्यासकार है । गीतांजलि श्री की पहली कहानी 'बेलपत्र' हंस पत्रिका में छपी थी । 'माई' यह गीतांजलि श्री का पहला उपन्यास है जिसके लिए उन्हें प्रसिद्धि मिली । गीतांजलि श्री ने अपने लेखन में वैचारिक रूप से स्पष्ट और प्रौढ़ अभिव्यक्ति के जरिए साहित्य के क्षेत्र में एक विशेष स्थान बनाया है । लेखिका गीतांजलि श्री ने अपने उपन्यासों में नारी की छटपटाहट, नए पुराने रिश्तों के संबंध, सामाजिक-आर्थिक विषमता, दाम्पत्य, संबंधों दाम्पत्येत्तर संबधों, रीति-रिवाजों के भंवर में फंसी नारी का चित्रण प्रमुख रूप से किया है ।

गीतांजलि श्री के लेखन का मूल विषय 'स्त्री' रहा है लेकिन बाकी विषयों पर भी उन्होंने बखूबी लिखा है । गीतांजलि श्री ऐसी कथा लेखिका हैं जिन्होंने न सिर्फ़ नारी विषय पर अपनी लेखनी चलाई है बल्कि जीवन के विभिन्न पहलुओं

पर भी तेज़ लेखकीय नज़र रखते हुए विविध कथ्यों को अपने साहित्य का विषय बनाया है । स्त्री विमर्श, किन्नर विमर्श, साम्प्रदायिक समस्या, आतंकवाद की समस्या, व्यक्ति विशेष की समस्या इन सभी समस्याओं को लेखिका ने अपने कथा साहित्य में स्थान दिया है। गीतांजलि श्री के संपूर्ण कथा साहित्य पर शोध कार्य हुआ है लेकिन 'रेत समाधि' उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन' इस विषय को लेकर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। शोध में इसी विषय पर काम करने की कोशिश की जाएगी।

'रेत-समाधि' यह पूरा उपन्यास 'अम्मा' के इर्दगिर्द घूमता है। 'चंदा' का 'चंद्र प्रभा' बनने का सफ़र 'रेत-समाधि' यह उपन्यास दर्शाता है। 'रेत-समाधि' इस उपन्यास के माध्यम से देखने को मिलता है कि किस प्रकार 'अम्मा' यानि 'चंदा' विभाजन की वजह से अपने प्रेमी 'अनवर' से दूर हुई और 80 साल की उम्र में बॉर्डर पार करके अपने प्रेमी 'अनवर' से मिलने कैसे पाकिस्तान पहुंची। उपन्यास में विभाजन की त्रासदी, स्त्रियों की स्थिति, वृद्धों की अवस्था, किन्नरों के प्रति दृष्टिकोण जैसे विषयों को देखा जा सकता है। गीतांजलि श्री ने यह उपन्यास काव्यात्मक ढंग से लिखा है जो इस उपन्यास को और भी मज़ेदार बनाता है। 'रेत-समाधि' उपन्यास का कथानक बहुत ही रोचक है। जैसे-जैसे आप आगे बढ़ते हैं वह रोचक हो जाता है। 'रेत-समाधि' को सबसे आकृष्ट करने वाली विशेषता उसकी ध्वन्यात्मकता है। 'रेत-समाधि' एक ऐसी रचना है जो उपन्यास

की विधा को एक नये रूप, नयी संवेदना, नयी भाषा, नए शिल्प से समृद्ध कर देती है। 'रेत समाधि' में प्रकृति, वृद्धों का संघर्ष, प्रेम, राजनीति, समाज में महिला की हालत, ट्रांसजेंडर, पितृसत्ता, विभाजन, पाकिस्तान जैसे विषयों को देखा जा सकता है।

'रेत-समाधि' उपन्यास में ऐसे कई सारे विषय है जो आज भी हमें दिखाई देते हैं। 'रेत-समाधि' उपन्यास पाठकों को समाज के प्रति जागरूकता पैदा करता है। गीतांजलि श्री अपनी अलग भाषा के प्रयोग से पाठकों को आकर्षित करती है जिसका 'रेत-समाधि' उपन्यास एक उदाहरण है । 'रेत-समाधि' प्रथमत: एक पारिवारिक उपन्यास है। गीतांजलि श्री अपने साहित्य के माध्यम से समाज को जगाने का काम करती है जिसके कारण उनके साहित्य को पढ़कर एक प्रकार की प्रेरणा मिलती है। आज प्रकृति पर कोई विचार नहीं करता वही गीतांजलि श्री ने 'रेत-समाधि' में प्रकृति को स्थान दिया है जहां पर गीतांजलि श्री ने प्रकृति का बहुत ही अच्छा वर्णन उपन्यास में किया है। लेखिका मन में समाज के भीतर समाज की परतों में बहुत धीरे-धीरे दाखिल होती है और बहुत संभलकर उन्हें खोलती हैं। उनका लिखा मन को छू जाता है जिसके कारण पाठकों को कृति समझने में आसानी होती है। गीतांजलि श्री ने 'रेत-समाधि' उपन्यास में समाज में हो रही सच्चाई यों को व्यंग के माध्यम से पाठकों तक पहुंचाया है।

गीतांजलि श्री एक एसी कथा लेखिका है जो समाज में घटित होनेवाली घटनाओं को अपने लेखन का माध्यम बनाती है। उनकी कृती 'रेत-समाधि' भी इसी तरह की रचना है। उनका साहित्य पाठकों को एक प्रकार का अलग दृष्टिकोण प्रदान करता है जिसके कारण पाठक वर्ग प्रेरित होते हैं इसलिए इस विषय पर शोध कार्य करने के लिए प्रेरणा मिली। गीतांजलि श्री के साहित्य के विषय प्रासंगिक होते हैं जो पाठकों को पढ़ने के बाद सोचने पर विवश कर देते हैं। उनके साहित्य को पढ़ने के बाद एक उर्जा सी जग जाती है इसलिए प्रस्तुत शोध के लिए गीतांजलि श्री के साहित्य को लेने की इच्छा हुई। 'रेत समाधि' को उसके अलग ढांचे की वजह से बहुत प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। 'रेत समाधि' यह उपन्यास हिंदी का होने के बावजूद उसे अतंराष्ट्रीय स्तर पर बहुत प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। यह विषय चुनने के पीछे यही कारण है कि 'रेत समाधि' को अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है इसी के साथ इसकी भाषा और शिल्प के लिए इसे बहुत प्रसिद्धि प्राप्त हुई है।

1.2 प्रासंगिकता

'रेत-समाधि' उपन्यास में प्रमुख तौर पर दो स्त्रियां है लेकिन इसके अलावा और स्त्रियां भी हैं। इन दो स्त्रियों में से एक है 'अम्मा' जो 80 साल की उम्र में फिर से जी उठने की सोचती है और अपने प्रेमी 'अनवर' से मिलने पाकिस्तान पहुंच जाती है, दूसरी है 'अम्मा' की 'बेटी' जो एक मॉडर्न विचारों वाली स्त्री है और मॉडर्न तरीके से जीने वाली है। विभाजन यह उपन्यास का मुख्य विषय है। विभाजन के

कारण हो रही स्थितियों को यह उपन्यास दर्शाता है । विभाजन की त्रासदी को उपन्यास में देखा जा सकता है । यह उपन्यास में दिखता है कि विभाजन ने मनुष्य को किन परिस्थितियों में उतरने को मजबूर कर दिया है । साथ ही यह उपन्यास समाज में वृध्दों की स्थिति का भी चित्रण करता है। यहां पर 'अम्मा' को अपने 'बेटे' द्वारा केवल इस्तेमाल किया जाता है। उपन्यास में पितृसत्ता किस प्रकार हावी है यह देखने को मिलता है । आधुनिक समय में भी पितृसत्ता के कारण लोगों को कई समस्याओं से गुजरना पड़ता है। पितृसत्ता 'रेत-समाधि' में 'बेटे' के जरिए देखी जा सकती है । समाज में किन्नरों का स्थान क्या है यह उपन्यास में देखने को मिलता है । ' रेत-समाधि' यह उपन्यास मूल रूप से हिंदी भाषा में लिखा गया है जिसमें उर्दू और अंग्रेज़ी शब्द भी है । उपन्यास में काव्यात्मक और वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है । उपन्यास का शिल्प अलग ढंग का है।

'रेत समाधि' उपन्यास सत्य घटनाओं को ध्यान में रखते हुए लेखिका ने बखूबी लिखा है । विभाजन के दौरान हुई स्थितियां आज वैसे की वैसी ही है। विभाजन के वक़्त या होने के कारण दो मुल्कों के आपसी संबंध टूट गए हैं जिसको उपन्यास में दर्शाया गया है जिसका कहीं न कहीं नुकसान मासूम लोगों को सहना पड़ता है । विभाजन के कारण लोगों में तनाव पैदा होता है जिसको आज भी देखा जा सकता है । अगर विभाजन न हुआ होता तो ऐसा न होता । दो मुल्कों में सीमा खींची गई जो कि पहले एक थे और इससे दूरियां पैदा हुई और एक दूसरे के प्रति नफ़रत पैदा हुई । विभाजन होने की वजह से कई झगड़े हो रहे हैं। विभाजन राजनीति के कारण हुआ

था। राजनीति में ऐसा ही होता है। लोग अपने स्वार्थ की वजह कुछ भी कर गुज़रते हैं। उसका बुरा परिणाम मासूम आम जनता को भुगतना पड़ता है। राजनीति का हाल वैसा ही है। वे केवल चुनाव में जीतने के लिए धर्म को माध्यम बनाकर जीत हासिल करना चाहते हैं।

आज धर्म के नाम पर बहुत सा बुरा काम हो रहा है। धर्म के नाम पर मनुष्य मनुष्य को मारने के लिए उतावला हो रहा है। अपने धर्म के संबंध में कोई बुरी बात सह ही नहीं सकता और कोई ऐसा करता है तो उसका परिणाम बुरा होता है। कुछ लोग अपने धर्म के अलावा बाकी लोगों धर्मों को अहमियत नहीं देते। धर्म के बजाय उन्हें और कुछ सूझता ही नहीं। वे न आगे देखते हैं और न ही पीछे। धर्म के आगे जैसे मनुष्यता खो सी गई है । उपन्यास में भी धर्म को लेकर बात की गई है जहां पर ‘अम्मा’ हिंदू है और ‘अनवर’ मुस्लमान है। दोनों की शादी होती है। विभाजन के दौरान वे अलग होते हैं। आगे चलकर ‘अम्मा’ ‘अनवर’ को अपना शौहर कहती है इसपर ‘बेटी’ ‘अम्मा’ से सवाल करती है कि इन दोनों धर्मों के बीच शादी कैसे मुमकिन है। विभाजन के कारण ही इन दोनों धर्म के बीच इतनी दूरियां पैदा हुई है यह देखा जा सकता है।

स्त्री आज स्वतंत्रत रूप से जीना चाहती है परंतु उसे वैसा जीने नहीं दिया जाता। स्त्री हमेशा संघर्ष करती रहती है। यह ‘अम्मा’ और ‘बेटी’ के माध्यम से प्रतीत होता है। स्त्री को अभी तक उस प्रकार की स्वतंत्रता नहीं मिली है जिस तरह वह चाहती है

। वह अभी तक जकड़नों में फंसी है। 'अम्मा' इस पितृसत्तात्मक जकड़नों से भागने का प्रयास करती है।

किन्नरों के प्रति समाज में लोगों के विचार 'रेत समाधि' उपन्यास में दिखाई देते हैं। समाज का किन्नरों के प्रति गलत दृष्टिकोण 'रेत समाधि' में बखूबी आया है जहां पर उन्हें इस समाज का हिस्सा ही नहीं माना जाता है। आज भी कई लोग किन्नरों को वैसे ही देखते हैं जैसे कि उन्हें पहले देखा जाता था। आधुनिक समय में जहां पर कहा जाता है कि लोगों का दृष्टिकोण बदल चुका है लेकिन ऐसा नहीं है।आज भी लोगों का किन्नरों के प्रति दृष्टिकोण नहीं बदला। आगे चलकर और बदल सकता है।

आज जहां पर पूरा विश्व में ज़्यादा से ज़्यादा संख्या पढ़ी लिखी है लेकिन अंधविश्वास, क्रूर रीति रिवाजों में ज़्यादा विश्वास रखती है। जिसका कोई मतलब नहीं होता है। ये सारी चीज है जो देश को आगे बढ़ने से रोकती हैं, मनुष्य की प्रगति को रोकती हैं। इन सारी बातों में विश्वास करना जैसे मूर्खता है और यही सारे बिंदु उपन्यास के माध्यम से पता चलते हैं।

1.3 शोध उद्देश्य

'रेत-समाधि' उपन्यास का अध्ययन करना।

'रेत समाधि' में चित्रित मुख्य सवालों का विश्लेषण करना।

'रेत समाधि' की भाषा,शैली एवं शिल्प की विशेषताओं को प्रकाश में लाना।

1.4 साहित्यिक पुनर्विश्लेषण

शभुनाथ 'रेत समाधि' के संदर्भ में कहते 'रेत-समाधि' में कभी भी कुछ हो सकता है। गीतांजलि श्री द्वारा लिखित 'रेत समाधि' उपन्यास का अध्ययन पूरे एक औरत और विभाजन पर है। इस उपन्यास में वृध्दों पर बात की गई है। इतिहास बूरा और अच्छी यादों का भी होता है। 'रेत-समाधि' उपन्यास में इतिहास परिवार, राष्ट्र और स्त्री को लेकर है'।[1]

जोस्ना जोस ने 'रेत समाधि' उपन्यास के बारे में कहा है कि 'रेत-समाधि' यह उपन्यास 80 साल की औरत अम्मा पर है। पैसों की वजह से रिश्तों में हो रहे बदलाव को यह उपन्यास दर्शाता है'।[2]

'रेत-समाधि' भाव व शिल्प का अनूठा प्रयोग' में डॉ.सोनल ने 'रेत समाधि' कि भाषा पर कहा है कि, गीतांजलि ने 'रेत समाधि' में भाव व शिल्प पर अनूठा प्रयोग किया है। लेखिका का स्वयं कहना है कि वह किसी उद्देश्य को लेकर नहीं लिखती बल्कि उसमें बहती चली जाती है। उपन्यास की तिन भाग 'पीठ', 'धूप', 'हद सरहद' जिसमें 'पीठ' में 'मां' और 'बेटे' के संबंध दिखाई पड़ते हैं। 'रेत समाधि' में किन्नर के प्रति बात है। धिरे धिरे उपन्यास में रहस्यों से पर्दा उठता है। 'धूप' में 'बेटी' 'मां' बन जाती है और 'अम्मा' 'बेटी'।

'रेत समाधि' में चार कहानियां हैं। यह उपन्यास भारत-पाक विभाजन की त्रासदी को व्यक्त करता है। 'रेत समाधि' की भाषा ही उसकी बड़ी प्रसिद्धि है'।[3]

डॉ. जितेश कुमार 'रेत समाधि' की नई परंपरा पर लिखते है कि, 'रेत समाधि' यह उपन्यास किसी सामान्य पाठक को आरंभ में भटका सकता है। उपन्यास में स्त्री की कहानी है। 'रेत समाधि' उपन्यास 'अम्मा' के वृद्ध अवस्था में प्रेम को बयान करता है। उपन्यास को पूर्ण करने की जल्दी नहीं है। गीतांजलि श्री ने बखूबी लिखा है। यह कहानी अम्मा के ईद गिर्द घूमती है। यह उपन्यास हमें पुरानी यादों में ले जाता है। स्त्री का जीवन कितना कठिन है यह दिखाया गया है। काव्यात्मक भाषा इस उपन्यास की विशेषता है। शब्दों का नयापन इसमें आया है। विभाजन इस उपन्यास में दिखाई देता है। साहित्य ही समाज को जोड़ता है। पाठकों के लिए उत्सुकता पैदा करता है। पाठकों को इसका नया प्रयोग अच्छा लगता है। यह उपन्यास एक नया संदेश गढ़ता है'।[4]

1.5 कार्य प्रणाली

'रेत-समाधि' उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन इस विषय पर शोध कार्य करने के लिए आधार ग्रन्थ का पाठ विश्लेषण कर उस पर आधारित आलोचनात्मक सामग्री का प्रयोग किया गया है। इसी के साथ अंतर्जाल पर उपलब्ध शोध आलेखों तथा पत्रिकाओं का भी प्रयोग किया गया है।

1.6 अध्याय विभाजन

प्रथम अध्याय प्रस्तावना है जिसमें विषय के उद्देश्य, प्रासंगिकता, साहित्यिक पुनर्विश्लेषण के बारे में बताया गया है।

द्वितीय अध्याय में गीतांजलि श्री का सामान्य परिचय है। इसमें उनका परिचय, जन्म, शिक्षा, परिवार, कार्य क्षेत्र, कृतित्व, फ़ैलोशिप, सम्मान और उनके साहित्य विशेषताओं पर चर्चा की गई है।

तृतीय अध्याय में 'रेत समाधि' उपन्यास की कथावस्तु एवं पात्रों का चरित्र चित्रण किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में 'रेत समाधि' उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। समीक्षात्मक अध्ययन के अंतर्गत विभिन्न समस्याएं, भाषा, शैली, शिल्प, उद्देश्य, प्रासंगिकता जैसे विषय है।

पंचम अध्याय निष्कर्ष एवं शोध संभावनाएं। शोध के निष्कर्ष एवं भविष्य के संभावित विषयों पर चर्चा की गई है।

1.7 गीतांजलि श्री के साहित्य पर उपलब्ध शोध सामग्री

१) 'गीतांजलि श्री कृत रेत-समाधि उपन्यास एक मूल्यांकन' -डॉ एम. फ़ीरोज़ ख़ान

२) 'गीतांजलि श्री कथा साहित्य: एक मूल्यांकन' -सारिका आनंद चौथे

३) 'रेत-समाधि: हंगामा है यूं बरपा' - हरीश त्रिवेदी

४) ‘रेत समाधि (गीतांजलि श्री)’- प्रयाग शुक्ल

५) ‘रेत-समाधि (गीतांजलि श्री): सरहद गाथा और औरत-कथा’ - रवीन्द्र त्रिपाठी

६) ‘रेत समाधि’ : भाव व शिल्प का अनूठा प्रयोग’ -डॉ सोनल

७) ‘रेत समाधि: एक सरहद गाथा’ -जोस्ना जोस

८) ‘गीतांजलि श्री की कथा-बगिया’ - रवींद्र त्रिपाठी

९) ‘रेत समाधि और मूल्यांकन के नए आयाम पद्धति शास्त्र, अनुवाद और राजनीति’ -जगदीश्वर चतुर्वेदी

१०) ‘मेरी रचना प्रक्रिया, भटकाव से पहचान की है’ - गीतांजलि श्री

११) ‘मेरे भीतर खाली कुछ नहीं....’- गीतांजलि श्री से रवींद्र त्रिपाठी की बातचीत

१२) ‘साधारण औरत में छिपी असाधारण स्त्री की महागाथा ‘रेत समाधि’ - जितेंद्र कुमार मीणा

१३) ‘गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में नारी जीवन- नीलम कुमारी

१४) ‘गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श’ - नेहा बरदिया डॉ के० सी० जैन।

इस लघु शोध प्रबंध में गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि' पर शोध कार्य किया गया है। गीतांजलि श्री की बाकी कृतियों पर शोध कार्य हुआ है लेकिन 'रेत समाधि' पर ज्यादातर काम नहीं हुआ है।

संदर्भ

1 https://vagartha.bharatiyabhashaparishad.org

2 https://supp.cus.ac.in

3 https://www apnimaati.com

4 डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान, गीतांजलि श्री कृत रेत समाधि उपन्यास एक मूल्यांकन, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2023

द्वितीय अध्याय

गीतांजलि श्री का सामान्य परिचय

द्वितीय अध्याय:- गीतांजलि श्री का सामान्य परिचय

2.1 गीतांजलि श्री का परिचय

गीतांजलि श्री हिंदी की एक प्रसिद्ध लेखिका है । वे एक कहानीकार और उपन्यासकार है। गीतांजलि श्री गीतांजलि पांडेय के नाम से भी जानी जाती है । गीतांजलि श्री को 'रेत समाधि' उपन्यास के लिए अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार प्राप्त हुआ है । गीतांजलि श्री के साहित्य के नारी जैसी विषयों पर लिखा मिलता है । वे हिंदी की पहली ऐसी लेखिका है जिन्हें 'अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार' प्राप्त हुआ है । स्त्री विषय के साथ-साथ गीतांजलि श्री ने किन्नर विमर्श, वृद्ध विमर्श, पर्यावरण विमर्श आदि जैसे विषयों पर भी लिखा है ।

2.2 जन्म

हिंदी की मशहूर लेखिका गीतांजलि श्री का जन्म 12 जून 1956 को मैनपुरी उत्तर प्रदेश में हुआ था । उनका परिवार मूल रूप से गाजीपुर जिले के गोडउर गांव का रहने वाला है ।

2.3 शिक्षा

गीतांजलि श्री ने अपनी बी.ए. कि शिक्षा श्रीराम कॉलेज विद्यालय से पूर्ण की है। इसके बाद गीतांजलि श्री ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से इतिहास में एम.ए.किया। इसके बाद गीतांजलि श्री ने महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा से 'प्रेमचंद और उत्तर भारत के औपनिवेशिक शिक्षित वर्ग' इस विषय पर अपने शोध की उपाधि प्राप्त की। शोध उपाधि प्राप्त होने के बाद गीतांजलि श्री ने कुछ दिनों के लिए जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में अध्यापन किया।

इसके बाद उन्होंने सूरत के सेंटर फॉर सोशल स्टडीज में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद की फ़ैलोशिप लेकर अपना शोध कार्य पूर्ण किया।

2.4 गीतांजलि श्री का परिवार

गीतांजलि श्री का परिवार उत्तर प्रदेश में ही रहता है। गीतांजलि श्री के पिताजी का नाम अविनाश लेकां है जो एक आई.ए.एस ऑफिसर थे। पिताजी के इस नौकरी के कारण उनका कई बार यू.पी. के छोटे- बड़े शहरों में तबादला होता रहता। पिताजी का तबादला होने के कारण ही गीतांजलि श्री हिंदी से बहुत ज़्यादा जुड़ पाई। गीतांजलि श्री के पिताजी बहुत खुले विचारों के थे। गीतांजलि श्री की माता का नाम प्रियथमा था जो गृहस्थी संभालती थी। उनकी दो बहनें और दो भाई है जिनका नाम है जयंती पांडे, गायत्री शुक्ला, ज्ञानेंद्र पांडे और शैलेंद्र। गीतांजलि श्री की शादी हो चुकी है और उनके बच्चे भी हैं। गीतांजलि श्री को अपने दोस्तों से लगाव है।

2.5 गीतांजलि श्री का कृतित्व

गीतांजलि श्री के करियर की शुरुआत उनकी पहली कहानी 'बेलपत्र' से हुई है जो 1987 में लिखी गई थी। उनकी 'बेलपत्र' कहानी हंस पत्रिका में छपी थी। 'बेलपत्र' कहानी की वजह से उन्हें बहुत प्रसिद्धि मिली। 'बेलपत्र' कहानी पाठकों को बहुत पसंद आई । इसके बाद गीतांजलि श्री ने हिंदी साहित्य को 'माई' उपन्यास दिया। 'माई' यह गीतांजलि श्री का पहला उपन्यास है जिसके लिए उन्हें बहुत प्रसिद्धि मिली। इस बीच गीतांजलि श्री ने कई सारी कहानियां और उपन्यास लिखे। उन्हें अपने कृतियों के लिए कई सम्मान मिले। 2018 में गीतांजलि श्री ने 'रेत समाधि' उपन्यास लिखा जिसका डेजी रॉकवेल ने अंग्रेज़ी में 'टूम ऑफ सैंड' नाम से अनुवाद किया जिसके लिए इस उपन्यास को अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार प्राप्त हुआ। 'रेत समाधि' की वजह से गीतांजलि श्री को और भी प्रसिद्धि मिली।

गीतांजलि श्री ने कुल पांच उपन्यास लिखे हैं उनका पहला उपन्यास 'माई' 1993 में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ। उनका दूसरा उपन्यास 'हमारा शहर उस बरस' है जो 1998 में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ। उनका तीसरा उपन्यास 'तिरोहित' है जो सन 2001 में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित किया गया । 'खाली जगह' गीतांजलि श्री का चौथा उपन्यास है, जो 2006 में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ । गीतांजलि श्री का पांचवा उपन्यास जिसके लिए उन्हें काफ़ी

प्रसिद्धि मिली, वह है ‘रेत समाधि’ जो 2018 में राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुआ था।

गीतांजलि श्री के अभी तक चार कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनका पहला कहानी संग्रह ‘अनुगुंज’ है जो सन 1991 में प्रकाशित हुआ था। उनका दूसरा कहानी संग्रह सन 1999 में प्रकाशित हुआ था जो है ‘वैराग्य’। ‘यहां हाथी रहते थे’ यह गीतांजलि श्री का तीसरा कहानी संग्रह है जो सन 2012 में प्रकाशित हुआ था। गीतांजलि श्री का चौथ कहानी संग्रह ‘प्रतिनिधि कहानियां’ है जिनमें उनकी प्रतिनिधि कहानियां शामिल है। उनकी कई कृतियों का दूसरी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है 2.6 विविध क्षेत्रों में कार्य

गीतांजलि श्री ने दिल्ली में स्थित नाटक ग्रुप ‘विवादी’ के साथ नाटकों का रूपांतरण और मंचन किया है। इसी के साथ उन्होंने रेसीडेंट राईटर के रूप में जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय नई दिल्ली में काम किया है। गीतांजलि श्री द्वारा कई शोध आलेखों का वाचन एवं पठन अनेक महाविद्यालयों और अनेक संगोष्ठियों में हुआ है। उनकी अंग्रेजी, फ्रेंच, जापानी, उर्दू में रचनाएं अनूदित हुई हैं। गीतांजलि श्री स्कॉटलैंड, फ्रांस, जर्मनी, आइसलैंड, कोरिया और स्विट्जरलैंड में ‘राइटर इन रेजिडेंसी’ के रूप में रही हैं।

2.7 फ़ैलोशिप

१) भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की सीनिय फ़ैलोशिप।

२) चार्ल्स वॉलेस ट्रस्ट की फ़ैलोशिप।

३) जापान फाऊंडेशन की फ़ैलोशिप।

४) नॉन्त स्थित उच्च अध्ययन संस्थान की फ़ैलोशिप।

2.8 सम्मान

१) इंदु शर्मा कथा सम्मान

२) पांचवां वैद सम्मान

३) हिंदी अकादमी साहित्यकार सम्मान

४) अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार 2022

५) वनमाली राष्ट्रीय पुरस्कार

६) कृष्ण बलदेव पुरस्कार

७) कथा यू.के. सम्मान

2.9 गीतांजलि श्री के साहित्य की विशेषताएं

गीतांजलि श्री स्त्री विमर्श पर लिखती हैं। उनके साहित्य में स्त्री विमर्श के अलावा भी विभाजन, पितृसत्ता, राजनीति, वृद्धों की स्थिति, प्रकृति, किन्नरों की समस्या, धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक, जैसे विषय भी देखे गए हैं। गीतांजलि श्री रूढ़िवादी परंपरा को तोड़कर अपने साहित्य में स्त्री को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। उनके साहित्य की स्त्री हमेशा आगे बढ़ती है। गीतांजलि श्री के साहित्य

के विषय हमेशा यर्थाथ पर ही होते हैं। समाज में जो भी घटित होता है उसे देखकर ही वे उसे अपने लेखन में उतारती हैं । उन्होंने अपने साहित्य में कभी किसी कथा को दोहराया नहीं है। वे भाषा में नवीन प्रयोग करती है। गीतांजलि श्री की भाषा और शिल्प सभी समकालीन कहानिकारों से अलग है। उन्होंने जीवन के सभी पक्षों को उजागर किया है। गीतांजलि श्री का साहित्य सभी पाठकों के लिए प्रेरणादायक होता है।

गीतांजलि श्री हिंदी की जानी-मानी कथाकार एवं उपन्यासकार है। गीतांजलि श्री की कई सारी कृतियां प्रकाशित हुई हैं। वे लेखन करना कभी नहीं छोड़ती। वे हमेशा लिखती रहती है। वे जब कोई कृति लिखती है तब वे पहले से ही उसका ढांचा नहीं बनाती। जैसे-जैसे कथा आगे बढ़ती है, उसी के साथ उनकी लेखनी चलती है। गीतांजलि श्री ने विविध क्षेत्रों में कार्य किया है। उन्हें बहुत जगह की फ़ैलोशिप प्राप्त है उसी के साथ उन्हें कई सम्मान मिल चुके हैं। गीतांजलि श्री प्रमुख रूप से स्त्री समस्या पर लिखती है। गीतांजलि श्री को साहित्य में नए-नए प्रयोग करने के लिए जाना जाता रहा है।

संदर्भ

1 गीतांजलि श्री, रेत समाधि, राजकमल प्रकाशन, 2018

2 https://amp-bharatdiscovery-org.cdn.ampproject

3 https://g.co/kgs/4EzehN

4 https://studybymind.com

5 https://ginajournal.com

6 https://hindigurujee.com

तृतीय अध्याय

गीतांजलि श्री के उपन्यास ‘रेत-समाधि’

की कथावस्तु एवं पात्रों का चरित्र चित्रण

तृतीय अध्याय: -गीतांजलि श्री के उपन्यास ' रेत- समाधि'

की कथावस्तु एवं पात्रों का चरित्र चित्रण

3.1 कथावस्तु

‘कथानक’’यह उपन्यास का महत्वपूर्ण तत्व होता है। उपन्यास में जो कहानी होती है वह कथानक होता है। साहित्य की किसी भी कृति की मुख्य कथा को कथानक कहते हैं।

‘रेत समाधि’ यह उपन्यास पूरा ‘बूढ़ी’ ‘अम्मा’ ‘चंदा’ का ‘चंद्रप्रभा’ बनने का सफ़र दर्शाता है। उपन्यास की शुरुआत ‘अम्मा’ से होती है और अंत भी ‘अम्मा’ से ही होता है। ‘अम्मा’ इस उपन्यास का मुख्य पात्र है। इसी के साथ ‘अम्मा’ की ‘बेटी’ भी इस उपन्यास का मुख्य पात्र है जो शुरुआत से लेकर अंत तक रहती है। इसके बीच कई पात्र आते हैं और जाते हैं लेकिन यही दो पात्र अंत तक चलते हैं। हालांकि उपन्यास में अन्य मुख्य पात्र भी हैं। यह उपन्यास तीन भागों में विभाजित है ‘पीठ’, ‘धूप’ और ‘हद -सरहद’ जहां पर हर एक भाग अपनी

कहानी दर्शाता है और इसमें चार कहानियां भी हैं ,जो बीते कई प्रसंगों को दर्शाती है । देखा जाए तो उपन्यास विभाजन की स्थिति को दर्शाता है। 80 साल की 'अम्मा' 'चंदा' अपने प्रेमी 'अनवर' से मिलने किस तरह बॉर्डर पर जाती है यह इस उपन्यास में दिखाई देता है। जीवन के इस पड़ाव पर होने के बावजूद 'अम्मा' यह कदम उठाती है। केवल अपने प्रेमी से मिलने के लिए वह यह संघर्ष करती है। 'अम्मा' अपनी इच्छा पूर्ण करती है विभाजन के कारण हुए त्रासदी को दर्शाते हुए अपने प्रेमी 'अनवर' से मिलती है। उपन्यास में कई सारे पात्र हैं जीवित और निर्जीव भी यानी जैसे कि दरवाजे और प्रकृति। उपन्यास में सभी चीजों का बड़ा व्यापक वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत उपन्यास की शुरुआत इस उपन्यास के मुख्य पात्र से होती है। 'अम्मा' प्रस्तुत उपन्यास की मुख्य पात्र है जो अपने पति की मृत्यु के बाद पूरे परिवार वालों से पीठ किए हुए थी। वह किसी से बात नहीं करती ,चुप रहती मानो उसके पति ही उसके सब कुछ थे। 'अम्मा' घरवालों से पीठ कर दीवार में घुसती चली जा रही थी। सभी घरवाले 'अम्मा' को चुप नहीं देख सकते इस कारण वे उनसे बातचीत करने की कोशिश करते थे। लेकिन 'अम्मा' नहीं मानती। उनके मुंह से केवल 'नहीं' शब्द निकलता था। 'अम्मा' के पति की जब से मूत्यू हो गई थी वह एक ही कमरे में रहती, हमेशा बिस्तर पर सोती रहती थी। पहले 'अम्मा' ऐसी नहीं थी। सबको संभालती थी। लेकिन काफी प्रयासों के बावजूद घरवाले 'अम्मा' को

उठा नहीं पाए। जो कोई भी 'अम्मा' से बात करने या कुछ पुछने आता , वह उसे नहीं कहती थी। 'अम्मा' केवल एक इंसान को मना नहीं कर सकती वह है उसका पोता 'सिड'। 'सिड' 'बड़े' का बड़ा बेटा था, 'बड़े' यानि 'अम्मा' का बेटा। 'सिड' एक शरारती बच्चा था जो 'अम्मा' को हंसाने के लिए कई उटपटांग हरकतें करता रहता था। जिसके कारण 'अम्मा' उसे टाल नहीं सकती, केवल वह एक ही जो 'अम्मा' को समझता था।

'अम्मा' का बेटा, 'बड़े' सरकारी अफसर होने के कारण उसका स्थानांतरण होता रहता था जिस कारण उन्हें घर बदलने पड़ते थे। 'बड़े' के घर के दरवाजे सबके लिए खुले थे। उपन्यास का दूसरा मुख्य पात्र 'अम्मा' की 'बेटी' जो है 'बड़े' के घर में नहीं रहती लेकिन आती जाती थी। 'बेटी' बड़ी खुले विचारों वाली थी। 'बेटी' अपनी जिंदगी अपने तरीके से जीना चाहती थी और घरवालों की रोक-टोक के कारण वह घर से बाहर जाने के लिए मजबूर हो गई और भाग गई। फिर वापस मुड़ने के लिए हिचकिचाने लगी। 'बेटी' को 'अम्मा' की तरफ़ से पूरी छूट थी, 'अम्मा' 'बेटी' को अपनी जिंदगी अपनी तरीके से जीने के लिए मदद करती थी। 'बड़े' को बहन से प्यार तो है लेकिन वह दिखाना नहीं चाहता। 'बड़े' और 'बेटी', 'बड़े की पत्नी' की चुगलियां करते हैं ताकि 'अम्मा' उठे पर 'अम्मा' नहीं उठती। 'बेटी' को पता था कि 'अम्मा' उसके

कहने पर उठेगी लेकिन ‘अम्मा’ बहन का भी कहना नहीं मानती। ‘अम्मा’ सबको नहीं कहती है लेकिन ‘नहीं’ यह शब्द एक वक्त ‘बेटी’ कहा करती थी जब वह सब की लाडली थी, जो कुछ करना होता वह ‘नहीं’ कह कर देती , करना है तब भी नहीं कहती। जब ‘बेटी’ बड़ी हुई और उसके प्रेमी घर आने लगे जो ‘बड़े’ को पसंद नहीं था तो ‘बड़े’ ने बहन से सख्ती करनी शुरू की जिस कारण ‘बेटी’ घर से भागने पर मजबूर हुई क्योंकि वह बिना किसी रोक-टोक के जीना चाहती थी। ‘बेटी’ अपनी जिंदगी अपने तरीके से जीना चाहती थी जिसके कारण उसने ‘बड़े’ के घर की दहलीज पार की। अब उसे दहलीज पर कदम रखने से डर लगता था। ‘बड़े’ को अपनी बहन का यूं घर से भागना पसंद नहीं आया लेकिन उसको अपनी बहन की चिंता थी। ‘बड़े’ और बहन के बीच अब बातें तो होती नहीं थी। लेकिन ‘अम्मा’ की वजह से अब वह एक दूसरे से मिलते थे।

‘बड़े’ को अपनी बहन का यूं अकेले रहना बहुत बुरा लगता। उसे दुख होता था। पर वह बहन की इस हरकत पर गुस्सा थे जिस के कारण वह उनसे बात नहीं करते पर जब बहन की तस्वीर अखबारों में प्रकाशित होने लगी तो ‘बड़े’ को लगा बहन की हरकतें बुरी नहीं और गुस्सा समाप्त हुआ लेकिन उसे ऐसी भी खबरें सुनने को मिली कि बहन का यूं अखबारों में प्रकाशित होना, गलत काम करके हुआ हो। ‘बड़े’ ने ‘अम्मा’ को भी बहन से फोन पर बातें करने से मना किया था लेकिन

जैसे ही बहन राष्ट्रपति भवनों में दिखने लगी तो 'बड़े' को एहसास हुआ की बहन ने कष्ट कर के सफलता हासिल की है। तब 'बड़े' ने 'अम्मा' से बहन के साथ नजदीकियां बढ़ाने के लिए कहा।

'बेटी' को पछतावा हो रहा था। उसे लगने लगा कि उससे जो किया वह गलत किया। वह वापस मुड़ना चाहती थी। लेकिन डर रही थी। बहू को लग रहा था कि उसने जो इस घर के लिए किया वह काफ़ी है और वह जाना चाहती थी। वह मॉडर्न बनना चाहती थी। 'सिड का एक छोटा भाई' भी था जो 'सिड' से बिल्कुल अलग था। वह हमेशा गंभीर रहता था उसे सभी चीज व्यवस्थित चाहिए थी। समाज में चली रही स्थिति से वह परेशान था। उसे छोटे बच्चे कदापि पसंद नहीं थे। एक दिन वह समुद्र किनारे शांति से बैठा था उसी वक्त एक बच्चा आकर उसे लात मारने लगा और हंसने को कहने लगा, वह प्रयास करने लगा लेकिन बच्चा उसे फिर से लात मारने लगा जिस के कारण उसे गुस्सा आया और उसने बच्चे की गर्दन पकड़ ली। यह देखकर उस बच्चे के माता-पिता दौड़कर आए और उसे बुरा भला कहने लगे और कहने लगे कि बच्चे ने केवल हंसने के लिए कहा था। इतनी सी बात पर ऐसा क्यों किया , हंस नहीं सकते थे ? और अपने बच्चे को लेकर चले गए। इसके बाद उसके सपने में भी वही बच्चा आता है और हंसने के लिए कहता है। वह दुनिया से ऊब चूका था जिसके कारण उसने हंसना ही छोड़ दिया था क्योंकि उसे लगता कि इस दुनियां में हंसने लायक कुछ बचा ही नहीं पर अब हंसी न आने की वजह से वह परेशान था। वह हंसने का प्रयास करता लेकिन उसके चेहरे पर हंसी आती ही नहीं।

हंसने पर उसका चेहरा अजीब सा हो जाता। वह कई लोगों के सामने हंसने की कोशिश करता लेकिन असफ़ल होता था क्योंकि जिसको सभी ने गंभीर ही देखा है उसको हंसते हुए देखना जैसे कि चकित होना था। लोगों को पता नहीं होता कि वह हंस रहा है या कुछ और कर रहा है क्योंकि जिसके चेहरे पर कभी हंसी देखी ही नहीं गई वह हंस कैसे सकता था ? जब उसकी मां को पता चला तो वह उसका इलाज करने लगी लेकिन उसे नहीं पता था कि बेटे को कौनसी बीमारी थी। बेटे का ख्याल रखने के लिए वे किसी को रखते। लेकिन वे सभी भाग जाते क्योंकि बेटे का यूं रातों में उठकर हंसना उन्हें डरावना लगता इसी तरह एक दिन मां ने रात को बेटे को यूं हंसते हुए देख लिया और पीर बाबा को दिखाया, पीर बाबा ने कहा उसे हंसना नहीं आता। इसके बाद बेटे की नौकरी में तरक्की हुई और उसे विदेश भेजा गया। उसके साथ उसकी बीमारी भी चली गई। बेटे ने विदेश जाकर 'अम्मा' के लिए छड़ी भेजी इसके कई सारे उपयोग थे और जिसमें से तितलियां आती थीं।

अब 'बड़े' का रिटायरमेंट होने वाला था। इसके लिए 'बड़े' ने सभी रिश्तेदारों और अफसरों को एक आलीशान पार्टी दी जिसमें सभी मौजूद थे। गिने चुने लोगों को छोड़कर। बड़े ने सभी को याद रखने लायक एक यादगार पार्टी दी। 'बड़े' की पार्टी में, हाथ बटाने के लिए 'यादव जी', 'विलास राम', 'पालटू गेंदा', 'कठेराम' आए थे जिनको 'बड़े' ने सिफारिश कर नौकरी पर लगवाया था क्योंकि 'बड़े' एक सरकारी अफसर थे। ' बड़े' की पार्टी में बहन के साथ उसका प्रेमी भी मौजूद था जो पार्टी में खुद का मजाक उड़ा रहा था और जिसके साथ

‘बड़े’ हंस-हंस कर बातें कर रहे थे। पार्टी के बीच में ‘अम्मा’ को जगाया जा रहा था लेकिन ‘अम्मा’ नहीं उठती। पार्टी में कई विषयों जैसे की ‘गुलदाउदी’ कहां रखोगे, ‘अम्मा’ कहां रहेगी, सारा सामान कहां रखोगे बातें हो रही थी, ‘अम्मा’ चुप होकर सुन रही थी पर उन्हें नहीं पता था की ‘अम्मा’ सुन रही थी ।

शानदार पार्टी के बाद ‘बड़े’ की घर बदलने की अफ़रा-तफ़री मच गई क्योंकि जहां ‘बड़े’ रहते थे वह घर सरकारी कर्मचारियों के लिए था और ‘बड़े’ रिटायर हो गए जिसके कारण वह अब फ्लैट में रहने वाले थे । ‘अम्मा’ के कमरे में एक मूर्ति थी जिसके पीछे एक राज छिपा हुआ था जो कोई नहीं जानता था। लेकिन सभी घर वाले इसी मूर्ति के पीछे पड़े थे। वे इस मूर्ति को हासिल करना चाहते थे पर पिताजी की मूर्ति थी इस कारण नहीं ले जा पाए। सभी घरवालों की नज़र इस मूर्ति पर थी, कोई उसे बेचना चाहता था तो कोई उसे सजाकर रखना चाहता था। वह मूर्ति देवालय में नहीं , ‘अम्मा’ के कमरे में अलमारी में थी। ‘अम्मा’ की एक बहन भी थी जिन्हें सभी ‘रोज़ी की बुआ’ बुलाते थे।

घर बदलने की अफ़रा-तफ़री में ‘अम्मा’ अचानक गायब हो गई। ‘अम्मा’ को घरवालों ने काफी ढूंढ़ा लेकिन नहीं मिली। इसी तरह ‘अम्मा’ एक दिन अचानक गिर गई थी और उसे चोट लगी थी। गुमशुदा ‘अम्मा’ पुलिस स्टेशन पर मिली, पुलिस स्टेशन में ‘अम्मा’ ने अपना नाम ‘चंदा’ और पति का नाम ‘अनवर’

बताया। यह सुनकर बच्चों को लगा कि 'अम्मा' की दिमागी हालत खराब हो गई है पर उन्हें इसके पीछे का कारण नहीं पता था। उन्हें इस बात की कोई खबर नहीं थी। 'बड़े' का स्थानांतरण होने की वजह से 'बेटी' 'अम्मा' को अपने घर बुलाती है जिसपर 'अम्मा' राजी हो जाती है।

अब 'अम्मा' 'बेटी' के यहां ठहरी थी। 'बेटी' 'अम्मा' का मां की तरह ख्याल रखती उसे किसी चीज़ की कमी नहीं होने देती। 'अम्मा' की देखभाल करने में बेटी को खुशी मिलती यह मौका वह अपने हाथ से नहीं जाने देती है। 'अम्मा' 'बेटी' को अपनी इतनी देखभाल करने से मना करती लेकिन 'बेटी' उसकी नहीं सुनती। दिन-रात 'बेटी' 'अम्मा' के बारे में सोचती रहती है। 'बेटी' 'अम्मा' की हर काम करती है और उसका पूरा ध्यान रखती है। कभी-कभी 'बेटी' को लगता है कि वह 'अम्मा' से पूछ ले कि वह घर से क्यों भागी थी लेकिन पूछ नहीं पाती। 'अम्मा' 'बेटी' के यहां 'बड़े' आराम से रहती है, अपना मनचाहा काम करती है , पौधों का ख्याल रखती है। जो 'अम्मा' अपने पति के चले जाने के बाद सबसे पीठ किए हुए थी, 'बेटी' के यहां आ जाने पर जैसे बदल ही जाती है। 'अम्मा' 'बेटी' के यहां खुश रहती है। 'बेटी' के साथ उसका प्रेमी भी कभी-कभी रहता 'केके' जिसको 'अम्मा' के आ जाने के बाद जिसके साथ 'बेटी' ने दूरियां बनाई।

‘अम्मा’ का ‘बेटी’ के यहां ठहरने की वजह से ‘रोज़ी बुआ’ जो ‘बड़े’ के घर कम आती जाती थी ‘बेटी’ के यहां उसका आना-जाना चालू रहता। ‘अम्मा’ को ‘रोज़ी’ के साथ समय बिताना अच्छा लगता था। जो ‘बेटी’ को नहीं अच्छा नहीं लगता, ‘बेटी’ को लगता था की ‘रोज़ी ‘उसकी जगह ले रही है क्योंकि ‘रोज़ी’ के आने के बाद ‘अम्मा’ ‘बेटी’ के साथ समय नहीं बिता पाती थी। ‘अम्मा’ को ‘बेटी’ के घर कोई टोकने वाला नहीं था। ‘अम्मा’ ने ‘रोज़ी’ और ‘बेटी’ के कहने पर साड़ी छोड दी और गाउन पहनने लगी। ‘अम्मा’ जिसके पति की मृत्यु के बाद बेजान हो गई थी अब ‘बेटी’ के घर आने के बाद उसमें फिर से जान आ गई थी ।

‘बड़े’ बीच-बीच में फोन कर ‘अम्मा’ के हाल-चाल पूछ लेता। ‘बड़े’ अब नए फ्लैट में रहने लग गया था। ‘बड़े’ को ‘अम्मा’ से केवल बैंक चैक पर हस्ताक्षर लेना होता था। ‘बड़े’ केवल ऊपरी हाल-चाल पूछती क्योंकि उसे ‘अम्मा’ से प्रेम नहीं था। ‘बड़े’ ‘अम्मा’ को वापस बूलाना था । ‘बड़े’ को यह चिंता थी कि वह ‘अम्मा’ को कहां रखेगा।

‘बेटी’ को अब ‘अम्मा’ वहां होने की वजह से ‘केके’ का आना पसंद नहीं था। पहले दोनों इस घर में एक साथ रहते, प्रेम करने लेकिन अब केके अगर कुछ उस तरह की हरकत करता है तो ‘बेटी’ को गुस्सा आता था। वह उसे टोंक देती

। ‘अम्मा’ ‘बेटी’ के यहां आकर इतनी बेफिक्र हो गई थी पर ‘बेटी’ उन्हें डांटती है इस डर से की ‘अम्मा’ को कुछ हो ना जाए।

अम्मा को अपनों से लगाव था। सिड बेटी के घर आता जाता रहता । बेटी अपने पड़ोसियों से खींची खींची रहती लेकिन अम्मा उनसे बातें करती। अब अम्मा अपना ख्याल खुद रखती थी। बड़े से बातें करती, अम्मा छडी का उपयोग जिस बात के लिए होना चाहिए उसके अलावा अन्य कामों में इस्तमाल करती थी।

बेटी के घर पर अम्मा एक दिन अचानक गिर गई है। अम्मा का यूं अचानक गिरने का कारण बेटी रोज़ी को ठहरती है। अम्मा और रोज़ी मूर्ति को लेकर कई बातें करते थे इससे बेटी को लगता रोज़ी अम्मा को कुछ भी बोलती रहती है। इस बात पर केके ने बेटी से कहा कि किसी पर भी कोई गलत आरोप न लगाओ। वही अम्मा को बेटी के यहां गिरना बहू को सही नहीं लगा और उसने बड़े से अम्मा को वापस लाने के लिए कहा और बड़े को बहुत सुनाया कि आप तो वहां जाते नहीं। मुझे और सिड को ही भेजते हैं बैंक चैक पर हस्ताक्षर करवाने। बड़े की पत्नी ने उसे बताया कि अम्मा गिर गई, पर बड़े को पता था कि अम्मा कैसे गिरी। साड़ी छोड़ गाउन पहनने से गिरी ऐसा बड़े को लगता था। लेकिन बड़े जैसा सोच रहा था वैसा कुछ नहीं था।बड़े ने अम्मा को गिरते देखा था जब वह बैंक जाते वक्त बेटी के घर के बाहर रास्ते पर एक बड़े पेड़ के पीछे छिपकर यह सब देख रहा था साथ ही अम्मा के साड़ी के प्रसंग कौवे को बता रहा था।

अम्मा का गाउन पहनना बड़े को अच्छा नहीं लगता था। उसे अम्मा केवल साड़ी में ही अच्छी लगती थी। बड़े उन दिनों की याद करता है जब वह अम्मा के लिए साड़ियां खरीद कर लाता था जिसपर उसकी पत्नी की हमेशा नज़र होती थी। अम्मा के लिए साड़ियां खरीदकर लाने की वजह से बड़े को कई दुकानदारों से पहचान बढ़ गई थी। बड़े अम्मा को साड़ी के उन प्रसंगों की भी याद दिलाता है कांजीवरम साड़ी, पैठणी साड़ी। फिर वह साड़ी जो दुकान में ही फटी हुई थी लेकिन बड़े को बहुत अच्छी लगी थी वह अम्मा के लिए दुकानदारों के मना करने पर भी उनसे बहस कर खरीदकर लाया था।

अम्मा जब गिरी तब वह उठने का प्रयास करती लेकिन नहीं उठ पाती, बेटी उसकी मदद करती है लेकिन बेटी से भी नहीं होता अम्मा धीरे-धीरे अपने आप उठ जाती है। बेटी ने डॉक्टर को फोन करती है और अम्मा को अस्पताल ले जाता है। अम्मा अस्पताल में रोज़ी को बुलाने के लिए कहती है। बड़े अम्मा से मिलने अस्पताल पहुंच जाता है, साथ ही साड़ी लाए क्योंकि वह समझता थे कि अम्मा गाउन पहनने की वजह से गिरी। पति की इस हरकत से बीवी को अच्छा नहीं लगता क्योंकि उसे डर था कि वह कहीं उसकी साड़ियां ना ला दे। अस्पताल में अम्मा के कई टेस्ट किए गए। सभी घरवाले परेशान थे। रोज़ी को खबर मिलते ही वह अस्पताल पहुंच जाती है। समाज को लेकर अपना दृष्टिकोण रोज़ी अस्पताल में व्यक्त किया करती है। इसके बाद अम्मा को अस्पताल से घर भेजा जाता है। घर आने के बाद अम्मा की सेहत की खबर लेने रिश्तेदार और बेटी के पड़ोसी आते हैं।

अम्मा से मिलने बेटी के यहां रोज़ी का आना कुछ ज्यादा ही बढ़ जाता है और रोज़ी का अम्मा को छूना बेटी को खटकता है। अम्मा और रोज़ी बार-बार सैर के लिए जाते कहै यह बेटी को पसंद नहीं था । अम्मा जब घर नहीं होती तो केके बेटी के साथ प्यार करने की कोशिश करता लेकिन बेटी उसे मना करती। बेटी ने अम्मा की वजह से केके से दूरी बनाई रखी। पहले बेटी अकेली रहती थी इसलिए अपने काम खुद किया करती थी लेकिन अम्मा के वहां आ जाने के बाद उसके काम बढ़ गए जिस कारण उसने एक कामवाली रखी लेकिन वह कामवाली सफ़ाई से काम नहीं करती थी जिसके कारण बेटी ने उसे निकाल दिया। फिर घर के सारे काम उसे ही करने पडते थे । अम्मा का यूं बार-बार रोज़ी के साथ घूमने जाना कभी झील के किनारे चप्पलें खरीद ने जाना और उसमें कामवाली का सही से काम ना करना इन सब से बेटी परेशान हो गई थी। केके को बेटी का यह बरताव ठीक नहीं लगा। बेटी जिस शांति के लिए बड़े के घर से बाहर निकली थी अब वह शांति नहीं रही थी।

अम्मा एक दिन अचानक चिल्लाने लगी। उनके शरीर के पीछे वाले हिस्से में कुछ उग आया था। यह सुनकर बेटी तुरंत अम्मा को अस्पताल लेकर गई। अस्पताल में अम्मा के फिर से टेस्ट कराए गए। अम्मा ने रोज़ी को बुलाने के लिए कहा और रोज़ी दर्जी के यहां मिलेगी यह भी बताया।   टेस्ट करने के बाद पता चला की अम्मा को सिस्ट आया है।

जब अम्मा अस्पताल में थी तब एक दिन बेटी को रोजी दिखी।   लेकिन रोज़ी ने बेटी को अनदेखा कर वह दुकान के अंदर चली गई। वह दुकान दर्जी की थी। अंदर जाने पर बेटी को रोज़ी तो नहीं दिखी लेकिन रोज़ी की तरह दिखने वाला लड़का रज़ा

मिला बेटी यह देखकर चौंक गई। रज़ा ने उससे पूछा क्या काम है तो बेटी ने कहा संदेश देना है अम्मा का नफ़ीस से की अम्मा बीमार है। जब रज़ा एक खरीदार से बातें करने में व्यस्त हो जाता है तभी बेटी वहां से निकल जाती है और रज़ा उसे देखने लगता है तब तक बेटी गायब हो जाती है।

अम्मा बीमार है यह जब रोज़ी को पता चला तो वह तुरंत अस्पताल पहुंची। अम्मा ने उसे देर से आने की वजह से खरी खोटी । अम्मा को सिस्ट हुआ था। डॉक्टर ने कहा था कि ऑपरेशन की जरूरत नहीं है वह अपने आप चला जाएगा। लेकिन जब अम्मा के शरीर से खून आने लगा तो डॉक्टर ने कहा ऑपरेशन करना होगा। यह सुनकर बड़े को लगा की वह एक साथ अम्मा से कई बैंक चैक हस्ताक्षर करके रखें ताकि अम्मा को ऑपरेशन के दौरान कुछ हो गया तो वह क्या उसका नुकसान न हो जाए। अम्मा का वह सिस्ट अपने आप फूट गया। ऑपरेशन की जरूरत नहीं पड़ी और अम्मा को घर भेजा गया। इस परिस्थिति को देखकर बेटी को लगा कि उसने शादी की होती तो कोई संभालने वाला होता। वह अकेली ही अम्मा को संभाल रही थी।

बेटी को रज़ा कई बार दिख जाता। बेटी का रज़ा और रोज़ी की यह बात खटक रही थी । जब कभी रज़ा बेटी को देखता वह उसे अनदेखा कर चला जाता। रज़ा दर्जी था जो अम्मा के भी कपड़े सीता था। रज़ा जब अम्मा के कपड़े सीने के लिए नाप लेता उस वक्त अम्मा को छूता था तब बेटी को बुरा लगता था। जब कभी रज़ा अम्मा के साथ बैठा हुआ होता तब बेटी को लगता कि वह रोज़ी थी। जब भी रज़ा बेटी को देखाता था बेटी को अच्छा नहीं लगता। अम्मा जब रोज़ी और केके साथ होती

है थोड़ा पी लेती। केके रोज़ी और अम्मा इन तीनों की बड़ी अच्छी दोस्ती हो गई थी। बेटी केके को यूं बार-बार घर आने से मना करना चाहती थी लेकिन कर नहीं पाती। बेटी को अब लगने लगा कि अम्मा कि इस अफ़रा-तफ़री में उसकी निजी जिंदगी खराब हो गई है, उसकी आज़ादी वह भूल गई है। सभी उसके कामों में दखल अंदाज़ी करते थे। बेटी को यह पसंद नहीं था। पाकिस्तान जाने और पासपोर्ट की बातें करते वक्त बेटी अम्मा और रोज़ी को सुन लेती। रज़ा और रोज़ी यह बात बेटी को खटकता था इस कारण वह अम्मा से उसके बारे में उनके धर्म के बारे में पूछती है , अम्मा उसे वही चुप करा देती है और धर्म को लेकर बात न करने के लिए कहती है।

एक दिन बेटी गिर जाती है और केके घर न होने के कारण रज़ा जो की बेटी के यहां उस समय मौजूद था उसे उठने में मदद करता है। बेटी को गिरने की वजह से चोट लग जाती है। रज़ा एक कमरे में जाकर कपड़े बदलकर रोज़ी बनकर आता है। यह देख बेटी चौंक जाती है। फिर रोजी बेटी का इलाज करती है।

रोज़ी कई दिनों से गयाब रहती है। बेटी को लगता है कि रोज़ी के साथ रज़ा भी गायब हो गया। अम्मा और रोज़ी ने तय किया था कि वे दोनों पाकिस्तान जाएंगे रोज़ी के यूं गायब होने के कारण अम्मा को लगा रोज़ी अकेली चली गई। अम्मा को रोज़ी की तलाश करने से मना किया गया क्योंकि उन जैसों को तलाश करना ही क्यों जिनकी इस समाज में कोई जगह नहीं । अम्मा ने जब रोज़ी को फोन किया तो किसी शकील ने उठाया। शकील रोज़ी के फोन से बातें करते सुनकर बेटी को लगा कि रोज़ी के कितने रूप है। अम्मा, बेटी, सिड और केके मिलकर रोज़ी के घर झील किनारे गए जहां पर उनकी मुलाकात शकील से हुई थी। शकील रोज़ी के यहां

किराएदार थी। शकील से रोज़ी के बारे में पूछते पर उसने कहा कि वह अस्पताल गई है और रोज़ी के बारे में बुरा भला कहने लगी। इसके पहले उसने कहा था कि रोज़ी अपने घर गई है। शकील उन लोगों से कहती है कि वह बीमार है और उन्हें वहां से जाने के लिए कहती है।अम्मा को रोज़ी के घर कुछ अजीब लगा वहां अचार की बासी बदबू आ रही थी, दीवारों पर लाल रंग के धब्बे थे जो खून की तरह दिख रहे थे, रोज़ी के कपड़े थे। अम्मा को शकील पर शक होता है।

एक दिन रोज़ी के मर जाने की खबर मिलती । रोज़ी जहां रहती थी वहां आग लगी थी। वहां के कई घर जल गए थे। अम्मा ने झील के नजदीकी पुलिस थाने में रोज़ी की गायब होने की रिपोर्ट दर्ज की। रिपोर्ट दर्ज करने के बजाय पुलिस अम्मा से कहने लगे कि इन जैसों के लिए आप इतना क्यों सोचती है। अम्मा ने पुलिस वालों की नहीं सुनी और रिपोर्ट दर्ज की। पुलिस वाले अम्मा को इन चक्करों में न पडने के लिए कहते हैं क्योंकि उनकी उम्र भी बहुत थी। पूछताछ करने पर पता चला कि शकील ने और उसके प्रेमी ने मिलकर रोज़ी को मार दिया क्योंकि रोज़ी ने घर उनके नाम पर करने से मना किया । शकील और उसका प्रेमी रोज़ी के घर पर कब्जा करना चाहते थे लेकिन रोज़ी के मना करने पर उन दोनों ने उसे मार दिया ताकि मरने के बाद वह घर उनका हो सके। शकील और उसका प्रेमी भी कहने लगा कि उन जैसों के लिए यहां कुछ भी नहीं। इस घटना के बाद किन्नरों की स्थिति क्या है इस पर लेख लिखकर केके ने अखबार में प्रकाशित किया।

रोजी की लाश मिली पर बहुत बुरी हालत में क्योंकि जिसका इस दुनिया में कोई नहीं होता उनकी लाशों को पुलिस वाले भी संभालकर नहीं रखते। रोज़ी के शरीर पर

घाव थे क्योंकि उसने अपना शरीर मेडिकल रिसर्च के लिए दिया। लाश को छूने से मना किया गया था लेकिन अम्मा ने उनकी नहीं सुनी और देख लिया। रोज़ी के चले जाने के बाद अम्मा फिर से अकेली रहने लगी, बीमार हो गई ।

रोज़ी की वजह से जो एक नई उम्मीद उनके अंदर जगी थी वह अब अम्मा के अंदर नहीं बची थी।। वह फिर से पहले की तरह हो गई। अम्मा बीमार थी इसलिए बड़े और उसकी पत्नी ने उन्हें वापस अपने घर बुला लिया क्योंकि वे समझते थे की बेटी का सही से ख्याल न रखने की वजह से अम्मा की यह हालत हुई थी। अम्मा बड़े के कहने पर बेटी का घर छोड़कर अपने घर चली गई।

अम्मा ने बड़े से उनका पासपोर्ट बनवाने के लिए कहा जिस पर बड़े कि लगा की अम्मा घूमने जाना चाहती है और यह सोचकर की अम्मा अपनी जिंदगी जीना चाहती है इसलिए बड़े राजी हुए लेकिन जब बड़े को पता चला की अम्मा पाकिस्तान जाना चाहती है तो बड़े को झटका लगा। बड़े को लगा कि वृद्धावस्था में अम्मा कुछ भी बोल रही है लेकिन जब अम्मा ने पाकिस्तान जाने की ज़िद की तो बड़े ने पाकिस्तान जाने का इंतजाम किया यह सोचकर कि आगे यह योजना बदल सकती है। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

अम्मा को तो अकेले भेजा जा नहीं सकता था जिसका कारण उसके साथ बेटी जाती है। जब वह बॉर्डर पर पहुंचते हैं तो देखते हैं कि हिंदी के मशहूर लेखकों पर नाटक चल रहा था। यह नाटक भारत और पाकिस्तान के विभाजन से संबंधित था। अम्मा और बेटी के संग और भी लोग थे जो अपने प्रिय जनों से मिलने आए थे। अम्मा

अपने साथ वह मूर्ति लाई थी। पाकिस्तान जाने के बाद अम्मा में फिर से जान आ जाती है। अम्मा पाकिस्तान में बिना किसी चिंता के घूमने लगी। अम्मा और रोज़ी के बीच तय हुआ था कि वे पाकिस्तान जाकर क्या करेंगे । इस वक्त अम्मा की उम्र 80 साल है और अम्मा आगे और बेटी उनके पीछे घूम रही है। अम्मा अपने बीते हुए दिनों की याद कर फुसफुसाती है, इस बात पर बेटी को गुस्सा आता है। राहत साहब को अम्मा और बेटी की जिम्मेदारी सौंप गई थी। अम्मा पाकिस्तान में कई जगहों की जानकारी निकलाती थी और अजीब हरकतें करती थी। जिससे बेटी को गुस्सा आता था।

घूमते घूमते अम्मा एक घर तक पहुंचती है। वह घर में अंदर जाती है। बेटी उसे रोकने ही वाली होती है तब उसे राहत साहब रोक लेते हैं। अम्मा घर में प्रवेश करती है और वह हर तरफ़ देखने लगती और बताती है और यह भी कहती है कि घर बदल गया है ।

खबर मिली की दो औरतें बॉर्डर पार करके बीना वीजा के पाकिस्तान पहुंची है और वहां घूम रही हैं। उन दोनों को ढूंढ़ निकालने के लिए कहा गया, वे दोनों औरतें धोखे से यहां आई है यह बात भी सामने आई। वे दो औरतें थीं अम्मा और उसकी बेटी। राहत साहब ने पाकिस्तान के एम्बेसडर को दोनों औरतों के गुमशुदा होने की खबर दी। राहत साहब को इन दोनों औरतों का जिम्मा सौंपा गया था। पाकिस्तानी एम्बेसेडर ने राहत साहब से पूछा कि वे दोनों औरतें यहां किसलिए आई थीं। राहत साहब ने बताया कि उसमें से एक औरत अपने पति का घर यहां है एसा बोल रही थी । जिन जगहों पर वह वीजा लेकर घूमने आई थी वहां घूमने के बाद राहत साहब ने

उन्हें वापस जाने के लिए रवाना किया लेकिन वे दो औरतें बीच रास्ते में गायब हो गयी। पहले से ही भारत-पाकिस्तान के संबंध सही नहीं हैं बात न बिगड़े इस कारण एम्बेसेडर ने चुपके से उन्हें ढूंढ़ निकालने के लिए कहा पर यह सब कुछ ज्यादा समय तक छिप नहीं पाया। अम्मा समझती है कि वह वहीं की है तो उसे घूमने के लिए वीजे की क्या जरूरत। खबरें छपी कि, दो औरतें बिना वीजा के पाकिस्तान में घुसी हैं । यह खबर उस गाड़ी में मौजूद एक लड़के ने दी कि वे औरतें उसको फूफी के समान लगी जिसके कारण उसने उनकी मदद की। उस लड़के ने इस संबंध में बहुत पूछताछ हुई और डांट भी पड़ी। फिर एक मिस्त्री ने बताया कि रास्ते पर उसने दो औरतों को बातें करते हुए सुना। वे दोनों झगड रही थीं कि अब क्या करना है। बीच में मिस्त्री वे हिंदुस्तान की फिल्मों पर बात करने लगा जिसपर पुलिस अधिकारी ने उसे डांटा तो मिस्त्री फिर से औरतों की बात करने लगा कि बेटी अम्मा से कहती कि आप यहां तो चिरौंजी देने आई थी अब वापस चलते हैं और गाड़ी पर बैठकर चली गईं। इसके बाद कई तरह की खबरें फैलाई गईं जिसमें से एक की दो औरतें बिना वीजे के पाकिस्तान में घूसी हैं और लड़कियों, बच्चियों और बुड्ढियां के साथ मुखबिरी और दहशतगर्दी कर रही हैं और उनका कोई तो मकसद है।

अम्मा और बेटी घूमते घूमते रेगिस्तान में पहुंच जाते हैं। अम्मा एक-एक कर रेगिस्तान में बैठकर तितलियां को कहानियां सुनाने लगती है -

पहली कहानी-‘कहानियां’

इन कहानियों में जिस लड़की का जिक्र आया है वह अम्मा है । अचानक खाना बनाते वक्त कोई आया और लड़की को पकड़कर ले गया। लड़की का शौहर अनवर किसी काम के सिलसिले में लड़की को नाना के यहां छोड़कर 'सिटी' गया था वहां से वापस आने के बाद उसे लेने आने वाला था। इस बीच एक घटना हुई। लड़की को पड़कर ट्रक में डाला गया जहां पर और भी लड़कियां मौजूद थी। वे डरी हुई थी। एक बार लड़की ने वहां से भागने की कोशिश भी की लेकिन असफ़ल हुई । उन ट्रकों में केवल लड़कियां थी। सभी को कहां लेकर जा रहे हैं किसी को कुछ नहीं पता था। वे उन्हें इस ट्रक से उतारकर दूसरे ट्रक में डालते कभी कोठरी में बंद करते। यह सिलसिला जारी रहता। उन्हें कभी खाना मिलता कभी नहीं मिलता यहां तक कि उन्हें सभी चीजें वही करनी पड़तीं। कब रात होती कब दिन होता यह भी मालूम नहीं होता। इस तरह कितने दिन बीत गए पता नहीं चला कहां ले जा रहे हैं पता नहीं चला। किसलिए ले जा रहे हैं पता नहीं चला। लड़की का चूल्हा वह खुला रखकर आई थी, जिसके कारण उसका घर जल चुका होगा, लड़की अपने शौहर को याद करती और कब उनसे मिलेगी यह सोचती रहती। लड़की मौका मिलते ही भागने के बारे में सोचती है। ट्रक में से लड़कियां बात करती कि उन्हें धंधा कराने के लिए लाया गया है और किसी रईस को बेच दिया जाएगा। बाद में उन्हें एक मिलेट्री ट्रक में भेजा जाता है। इसके बाद पहली बार उन्हें नहाने को मिलता है और साफ सुथरी जगह पर रहने को मिलती है। लड़की को चोट लगी थी उसने अपना कुर्ता फाड़कर चोट पर बांधा। लड़की अपने साथ एक मूर्ति लाई थी जो उसके शौहर अनवर की तरह दिखती थी।

दूसरी कहानी –'मूर्ति और वो लड़की'

जब भी गोलियों की आवाज आती लड़की मूर्ति को कसकर पकड़ती। कभी-कभी लड़कियों को हंसने की आवाजें आती जो उन्हें पड़कर लायी थीं। लड़कियों को नहीं पता था कि वे बचेंगी या नहीं लेकिन उन्हें इस बात पर ज़रुर यकीन था कि उन्हें किसी को बेचा जाएगा। बंटवारे के चक्कर में। कभी उन्हें जंगल में उतारकर उनसे खाना बनवाते। बीच में ट्रक का टायर पंचर हुआ। हवा भरने के लिए ट्रक को रोका गया हवा भरने के बाद ट्रक फिर से चल पड़ा। उन्हें ट्रकों से उतारकर ट्रेन में डाला फिर ट्रेन से उतारकर ट्रकों में फिर उस ट्रक से दूसरे ट्रक में। तभी भगदड़ मची। लड़कियों को नहीं पता था किनसे भागना है। जो उन्हें पकड़ कर लाए उनसे या जो आ रहे हैं उनसे। उनको बस इतना पता था कि, भागना है। लड़की की मूर्ति ट्रक में ही रह गई जिसके बिना वह भागना नहीं चाहती थी। उन्हें फिर से ट्रक में डाला गया और भागने को कहा गया तभी लड़की के साथ एक छोटी सी बच्ची उसका घबराए हुए हाथ थामें थी। सभी लड़कियों भागने के लिए कहा गया। उन सभी को अलग-अलग भागने के लिए कहा गया ताकि वे पकड़ीं न जाएं। उनसे कहा गया कि यहां फिलहाल विभाजन के कारण परिस्थितियां ठीक नहीं हैं, परिस्थितियां ठीक होने के बाद लौट आना फिर उस लड़की को उसकी मूर्ति वापस दी और भागने के लिए कहा गया। वह लड़की मूर्ति और जिस बच्ची ने उसका हाथ थामा था उसे लेकर भागी। लड़की ने जिस बच्ची का हाथ पकड़ा था वह बच्ची थी रोज़ी।

तीसरी कहानी-'रेत समुंदर'

छोटी बच्ची और लड़की रेत पर चलते जा रहे थे। रेत काफ़ी खतरनाक थी। वे सीटियां बजाते रेत को पार कर रहे थे। वह पीछे मुड़ना चाहती थी क्योंकि उनसे आगे बढ़ा नहीं जा रहा था। लेकिन पीछे खतरा था। इस कारण वह आगे बढ़ती गई। उन्हें पता था कि पीछे जाने के बाद उन्हें फिर से क़ैद किया जाएगा वे। दोनों रेत को जैसे तैसे पार कर रही थीं। बाकी लड़कियों की सीटियों की आवाज़ कम होती जा रही थी। इससे समझ में आ रहा था की लड़कियां कमजोर हो गई हैं। धीरे-धीरे सीटियां बजनी बंद हो गई।

चौथी कहानी-'डूबों का होना' ।

रेत में चलते-चलते थक कर वे बेहोश हो गए थे होश में आने पर पता चला कि वे किसी पेड़ से अटके हुए थे। भूख लगने की वजह से जब उन्हें कनक का खेत दिखा तो उन्होंने कच्चे ही खा लिए। जब घूमते घूमते उन्हें पानी मिला तो पानी भरने के लिए बर्तन नहीं थे। इसलिए उन्होंने कपड़ा पानी में डूबाकर उसे निचोड़कर पानी पिया। उन्हें किस ओर जाना है नहीं पता था और डर था कि गलत राह पर जाने से वह फिर से पकड़ी जाएंगी। सीटियां बजाने से भी उन्हें डर लगता कि सीटियों की आवाज सुनकर कही फिर से उन्हें पकड न ले। सीटियों की आवाज सुनकर उन्हें अच्छा लगता। आसपास किसी के होने का एहसास होता। सीटियां बजी लेकिन सच में सीटियां बजी या कुछ और उन्हें नहीं पता चला सीटियों की आवाज सुन उन्होंने सीटियां बजाई, सीटियां बजने पर उन्हें हिम्मत मिलती पर सिटी बजाने पर सिटी का उत्तर नहीं मिलता। इस तरह वे कई दिन भूखे पेट चल। रेत पर चलते रहे।

एक दिन छोटी बच्ची ने लड़की ने पूछ लिया कि हमने ऐसी क्या गलती की थी कि हमारी हालत ऐसी हो गई है। लड़की ने उसे बकरकना राजा की कहानी सुनाई। कहानी खत्म होने के बाद दोनों सो गए। जब लड़की की आंख खुली तो वह अस्पताल में थी। उसकी मूर्ति उसी के पास थी। उसके साथ बच्ची नहीं थी। इसके बाद लड़की को पता चला कि रेखा खींची गई है और दो मुल्क बन गए हैं।

ये चार कहानियां अम्मा की आपबीती है। जिन्हें वह तितलियों को सुना रही थी। कहानियां खत्म । वर्तमान आता है। अम्मा और बेटी रेगिस्तान में थीं। पाकिस्तान के पुलिस अफसर उनकी खोज कर रहे थे और वे दोनों पकड़ी गई। उन्हें पूछताछ के लिए ले जाया गया। बेटी बहुत डरी हुई थी। अम्मा के चेहरे पर कोई डर नहीं था। वह बड़े आराम से सवालों का जवाब दे रही थी। अम्मा का नाम पूछने पर अम्मा अपना नाम चंदा और शौहर का नाम अनवर बताती है। जिस कारण पाकिस्तान इंटेरोगेटर को गुस्सा आता है। घर का पूछने पर अम्मा मिट्टी की ओर इशारा करती है और कहती है कि वह यही की है। अम्मा पूछती है कि पाकिस्तान बनाने के लिए हमारी जिंदगी बर्बाद क्यों की गई। अम्मा उनका सहयोग ही नहीं करती। एक तो उनसे सवाल करती है। उन्होंने सवाल किए तो उसका उल्टा जवाब देती है। और कुछ पूछने पर अपने विचार उनको सुनाने लगती हैं जिसके कारण वह इंटेरोगेटर परेशान हो जाता है। जब अम्मा और बेटी 'तुरखम' गई थी तब वहां पर उनकी बड़ी खातिरदारी हुई , इंटेरोगेटर ने उनसे पूछा आप वहां किसलिए गई थीं। इंटेरोगेटर ने उन्हें साफ़ कहा कि मेरे सवालों का जवाब सही दे दीजिए और अपने मुल्क वापस चले जाए नहीं तो हम आपको जाने नहीं देंगे। यह सुनकर बेटी मान गई। लेकिन

अम्मा कहने लगी कि मुझे नहीं जाना है। मुझे तुम्हारे स्पेशल अफसर से मिलना है। इंटेरोगेटर बेटी से कहने लगा आप अम्मा से कहो कि कॉपोरेट करे लेकिन अम्मा अब बेटी की बातें भी नहीं सुन रही थी। अम्मा उनके सवालों के जवाब देने के बजाय उन्हें जहां पर रखा गया था उसी कमरे की शिकायतें करने लगी और वे वहां बस से कैसे पहुंचे इसके बारे में बताने लगी। अम्मा बार-बार इंटेरोगेटर के सवाल पूछने पर वही जवाब देती। कौन यहां लाया पूछने पर बताती अनवर। पाकिस्तानी पुलिस अफ़सर अम्मा और बेटी का समान जांच कसे के लिए ले गए। समान वापस देने पर अम्मा को समान में से मूर्ति नहीं मिली। अम्मा के पूछने पर उन्होंने कहा कि मूर्ति की असली जगह पर उसे रख दिया गया है। अम्मा ने उन्हें बताया कि मुझे भी मेरी सही जगह पर रहने दो।

बेटी को अम्मा की इन बातों का कुछ पता नहीं था। वह वृद्धावस्था में अम्मा की खुशी देखना चाहती थी। जो बाहर घूमने की खुशी थी वह भी पाकिस्तान जिसको पूरा करने के लिए बेटी अम्मा के साथ चली आई। लेकिन पाकिस्तान आने के बाद अम्मा कुछ अलग ही तरह का बर्ताव करने लगी और जिस की वजह से बेटी परेशान हुई। बेटी इससे परेशान होकर अपने मुल्क वापस जाना चाहती थी लेकिन अम्मा की इंटेरोगेटर के सामने बकवास बातें करने की वजह से फंस गई थी। बेटी को अम्मा की इन बातों के पीछे की सच्चाई मालूम नहीं थी। अगर पता होता तो वह परेशान न होती। अम्मा ने बेटी को इसके बारे में पहले कुछ नहीं बताया था। बेटी को केके की बहुत याद आती। बेटी को लगता कि दोनों मुल्कों के आपसी संबंध सही न होने के कारण और बिना वीजा के सफ़र करने पर उन्हें परेशान किया जा रहा है। बेटी को

अम्मा पर बहुत गुस्सा आता है क्योंकि अम्मा केवल अपने स्वार्थ के बारे में सोच रही थी। उसे किसी तरह अनवर से मिलना था जो वह अपना शौहर बताती है। कभी-कभी बेटी को लगता है पुलिस अफसरों से बंदूक लेकर पहले वह पुलिस अफसरों को मारे उसके बाद में अम्मा को और फिर खुद को क्योंकि वैसे भी तो वे बचने वाले थे नहीं और उसे यह भी डर था कि वह उन दोनों को अलग न कर दे। पर अम्मा अपनी अनवर से मिलने की ज़िद नहीं छोड़ ती है। अम्मा उन पुलिस अफसरों से बातें करती है। वह भी हंसकर। बेटी हमेशा वहां से जाने के बारे में सोचती है। पर यह तभी संभव है जब ऊपर से आर्डर भेजा जाए। जहां पर उन दोनों को रखा गया था वहां पर सारी सुख सुविधा थी लेकिन बेटी को वह कैद लग रही थी। अम्मा वहां बड़े आराम से थी।

अम्मा कौवे से बातें करती रहती। नवाज़ भाई पाकिस्तानी फौजी अफसरों में से एक थे जिन्होंने दोनों की काफ़ी मदद की थी। बड़े साहब आने वाले थे। बेटी बड़ी खुश थी कि इस कैद से छुटकारा मिलेगा। भारत वापस जाने के बाद हाल-चाल पूछने फोन करने के लिए बेटी नवाज भाई से उनका फोन नंबर मांगती पर नवाज भाई मना करते हैं क्योंकि दोनों मुल्कों के आपसी संबंध सही नहीं थे और उनके इस तरह करने पर दोनों पर आफत आ सकती थी और बेटी से कहते हैं कि यही आशा करो कि दोनों मुल्कों के आपसी संबंध ठीक हो जाए।

अम्मा के कहने पर वहां के बड़े अफसर अली अनवर आते हैं। अम्मा उन्हें नन्हे मियां कहती है। अली अनवर को देखकर बेटी को यकीन हो जाता है कि अम्मा की दिमागी हालत सही नहीं है क्योंकि अली अनवर बेटी की उम्र के थे जिन्हें अम्मा अपना शौहर

कह रही थी। बेटी भगवानों को याद करने लगी। अली अनवर अम्मा से सवाल पूछता है जिसका अम्मा उल्टा जवाब देती है और सरहद पर बोलने लगती है। दो दिन बाद अली अनवर फिर आते हैं और उनसे कहते हैं कि आप लोगों के जाने का समय आ गया है जिसपर अम्मा उससे अपनी मूर्ति के बारे में पूछती है। अली अनवर कहता है की मूर्ति को सही जगह रख लिया है। इसपर अम्मा कहती है मैं भी मेरे सही जगह हूं नहीं तो पूछो अपने पिताजी से। इसपर अली अनवर नाराज़ हो जाते हैं। अम्मा अली अनवर से उसके पिताजी को यहां बुलाने की जिद करती है।

बेटी को केके बहुत याद आते हैं वह सोचती है कि क्यों उसने अम्मा की वजह से केके से दूरियां बनाई। उसे केके के साथ बिताए प्रेम प्रसंग याद आते हैं। बेटी केके को एक पत्र लिखती है पाकिस्तान में हुई सभी बातों के बारे में बताती है। बेटी को अब लगता है कि उसने अम्मा को अपने घर लाकर और छूट देकर बड़ी गलती की। बेटी को अपना जीवन ऐसा व्यतीत नहीं करना था। बेटी ने अम्मा से एक दिन पूछ लिया कि आप की और अनवर की शादी कैसे मुमकिन है ? क्योंकि अनवर मुसलमान और अम्मा आप हिंदू। इसपर अम्मा बेटी को खूब सुनाती है। वह कहती है कि ,हिंदू मुसलमान ऐसा कुछ नहीं होता। जब दो व्यक्ति एक दूसरे से प्यार करते हो और अगर दोनों परिवार वालों की इजाजत हो तो शादी भी हो सकती है। जिसके लिए हमारे और अनवर के परिवार वाले राज़ी थे। कानून तक हक़ देता है कि दो धर्म के बीच शादी हो सकती है। अम्मा ने बेटी और केके का उदाहरण देकर बताया तो फिर बेटी पूछने लगी आप दोनों की शादी कहां पर दर्ज है ? तो अम्मा ने उससे पूछा कि विभाजन के दौरान हुई तबाही कहां दर्ज है ? बेटी केके के संग बिताए लम्हें को

याद करती रहती। एक दिन अम्मा और बेटी को संदेश मिलता है कि वे वापिस जा सकती है। अम्मा ने अनवर के बारे में पूछा तो अम्मा को पता चला अनवर बीमार है और उनसे मिलने नहीं आ सकते पर अम्मा की सहेली ने अम्मा को अनवर की बीमारी के बारे में नहीं बताया।

क्रिकेटरों में बातें हो रही थी। क्रिकेटर अपनी बात बताता है कि उसकी आर्थिक स्थिति सही न होने के कारण वह फौज में भर्ती हुआ था जहां पर उसकी मुलाकात इन दोनों औरतों से हुई। उसको इन दोनो औरतों की पहरेदारी करने के लिए रखा गया था जहां पर उसके और भी साथी मौजूद थे। इन दोनों औरतों में एक अम्मा और एक बेटी थी एक डरी हुई दूसरी जिसे किसी चीज की परवाह नहीं। क्रिकेटर साथियों को बता रहा है कि उसे उन दो औरतों की इतनी सख्त पहरेदारी नहीं करनी पड़ी। बिना वीजे के घूमने की बात छिड़ी क्योंकि वे दो औरतें भी बिना वीजे के पाकिस्तान में घुसी थीं। बिना वीजे के घूमने पर बातचीत छिड़ी की हमने तो हमारे दोस्तों को बिना वीजे के घुमाया था। अम्मा की हिचकियों की बात छिड़ी। पहले तो हिचकिया बेटी के गुस्से मारने से बंद हो गई लेकिन फिर बार-बार आने लगी तो अम्मा ने बाहर गद्दा डाला और बेटी को पीठ पर लात मारने के लिए कहा बेटी राजी हुई और बेटी ने वहां मौजूद फौजी को भी मारने के लिए कहा। अम्मा की हिचकियां बंद हो इसलिए फौजी अफ़सर अम्मा को लाते मारने लगे। हिचकियां बंद होती। यह कार्यक्रम बंद होता। फिर हिचकी आने पर वही फिर से शुरू होता।

अम्मा अनवर से मिलने अली अनवर के बंगले में पहुंची। अनवर बीमार थे। अम्मा अनवर से बातें करने लगी। जीवन में जो भी हुआ अम्मा ने अनवर को बताया।

अनवर बीमार थे। वह सोए हुए थे। अम्मा ने उन्हें छूआ। अम्मा के छूने पर अनवर का शरीर हिला। अम्मा ने अनवर से कहा कि वह उसका इंतजार कर रही थी कि कब वह उसे लेने आएगा। अम्मा ने अनवर से कहा कि पूरा जीवन जीने के बाद हम मिले। अली अनवर कमरे के बाहर खड़े थे कमरे में आवाज होने पर अनवर अंदर आए और उसने देखा की अम्मा का हाथ अनवर के दिल पर था। अनवर ने अम्मा को जल्दी जाने के लिए कहा क्योंकि ऐसा करना जुर्म था और इससे पहले किसी को पता चले और अनवर खतरे में पड़े उसने अम्मा को जाने के लिए कहा अम्मा जब जा रही थी तभी गोली चली और अम्मा नीचे गिर गई।

खबरें छपीं ‘दो साए रात के अंधेरे में आए और एक साए पर गोली चली’   वे दो औरतों में से एक थे। यह खबर फैल गई। बड़े को जब इसके बारे में पता चला तो उसने आवाज उठाई। इस वारदात को लेकर कई प्रकार की खबरें छपी । बड़े का साथी कौवा बना। जो कौवा हमेशा अम्मा के पास रहता। अब वह बड़े के संग रहता है। अम्मा के पास वह कौवा बड़े का तरफ़ से आया था। वह अम्मा को देखने आया था। कौवे ने सब कुछ देख लिया था। लेकिन बड़े को नहीं बता सकता था क्योंकि इनसानों को कौवे की भाषा समझ में नहीं आती। कौवे को इनसानों की भाषा समझ में आती है। बड़े आज अगर कौवे की भाषा समझ पाते तो वह जान पाते कि क्या हुआ था क्योंकि कौवा हर वक्त अम्मा के साथ ही रहता था।

कौवे ने देखा कि दो सायों के बीच रात के अंधेरे में बात हो रही है। वे थे अम्मा और नवाज भाई। नवाज भाई और अम्मा रात के अंधेरे में अनवर के बंगले पर पहुंचे।

अम्मा को अनवर से मिलने अनवर के बंगले में ले जाया गया था क्योंकि अनवर तो उठ नहीं सकता था ।। कौवा भी उनके साथ अनवर के बंगले में गया। अम्मा यानी चंदा और अनवर, एक पति -पत्नी दोनों प्रेम भरी बातें कर रहे थे। उनके जीवन में जो भी बीता इसपर बातें हो रही थीं। अम्मा ने अनवर की यह भी बताया कि उसने उसका इंतजार किया। अम्मा ने अनवर को छुआ। जिससे अनवर के शरीर में हलचल हुई । अचानक अली अनवर कमरे में अंदर आए और उसने देखा अम्मा का हाथ अनवर के दिल पर है। अली अनवर ने अम्मा को वहां से जाने के लिए कहा। जब अम्मा वहां से जाने ही वाली थी अम्मा पर गोली चली और वह गिर गई। अम्मा को यह मौत अच्छी लगी क्योंकि वह अनवर से मिल चूकी थी । इस मिलन का अम्मा को कई वर्षों से इंतजार था।

अली अनवर कहने लगा कि मैंने गोली नहीं चलाई। अली अनवर को डर था कि अगर किसी को पता चला कि उसने उस एक औरत की मुलाकात अनवर से की है तो उसे सज़ा जरूर मिलेगी जिस कारण उसने यह बयान दिया कि जब उसने देखा कि कोई भाग रहा है तो वह गोली चलाने ही वाला था कि गोली चली। साथ में यह सवाल भी था कि अगर तुम्हें पता था कि उस औरत को वहां खतरा है तो तुम उन्हें मिलवाने लाए ही क्यों। अगर लाए भी तो समय रहते जाने के लिए क्यों नहीं बोला ऐसा किया होता तो किसी को भी कानों कान खबर नहीं होती और वह मिल भी लेते

अलग-अलग तरह की खबरें फैल गई थी। इस वारदात को लेकर क्या झूठ है क्या सच किसी को नहीं पता था केवल कौवे को पता था। बेटी को इस वारदात के बारे

में कुछ पता नहीं था। जब सब कुछ हुआ तो बेटी सोई हुई थी। इसको सुनकर बेटी को जैसे सदमा लगा। उसे कुछ होश न रहा कि उसके साथ क्या हुआ। अली अनवर बेटी की इस हालत की वजह से उसके माथे पर हाथ रखना चाहता था लेकिन कर नहीं सका। अली अनवर ने ही बेटी को वापस अपने मुल्क भेजा। बेटी को कोई होश नहीं था क्योंकि जिसका उसको डर था-अम्मा को खो देने का वह हो चुका था जिसकी वजह से बेटी का होश खो गया था।

फिलहाल बड़े अपने नए फ्लैट में था। बड़े हमेशा दरवाजा खुला रखता था। उनके यहां बहुत चोरियां हो रही थी। बड़े का मानना था कि दरवाजा खुला रखने से चोरियां नहीं होती इसलिए वह दरवाजा खुला रखता था लेकिन फिर सिड पत्नी और बड़े की पत्नी दरवाजा बंद करते थे। जब घरवाले दरवाजा बंद करते तब बड़े दरवाजा खुला करते थे फिर घर-वाले दरवाजा बंद करते थे। अब बड़े के छोटे बेटे आए थे और सभी परिवार वालों के बीच खर्चे को लेकर बातें हो रही थी। बड़े कौवे के संग खेल रहे थे कभी बड़े कौवे से बातें करते। सभी घर वाले बड़े को कौवे के साथ खेलते देखकर अपनी बातचीत बंद कर बड़े और कौवे को देखने लगते थे।

रेत समाधि उपन्यास का कथानक बहुत ही रोचक है। आप जिस तरह आगे बढ़ते हैं उसी के साथ नई बातों पर से पर्दा खुलता है। मुख्य रूप से रेत समाधि का कथानक अम्मा के चंदा से चंद्रप्रभा बनने के सफर को रेखांकित करता है जिसमें कई सारी कहानियों के साथ यह सफ़र आगे बढ़ता है।

3.2 पात्रों का चरित्र चित्रण

मुख्य पात्र

मां / अम्मा

अम्मा इस उपन्यास की मुख्य पात्र है। अम्मा की उम्र 80 साल है। अम्मा अपनी वृद्ध अवस्था में खुद को जवान महसूस करती है। अम्मा अपनी खुशियों के लिए स्वार्थी बन जाती है। अम्मा अकेलापन महसूस करने की वजह से वे किसी से बातें नहीं करती है। अम्मा को सैर करना पसंद है। अम्मा को अपने दोस्तों के साथ समय गुजारना पसंद है। अम्मा सभी से मिल-जुलकर रहती है। वे अपने परिवार वालों से प्यार करती है। अम्मा अपने ही ख्यालों में खोयी रहती है। वृद्ध अवस्था में पहुंचने पर भी वह स्वतंत्र जिंदगी जीना चाहती है। अम्मा डिप्रेशन से लड़ रही है। प्रो. रामकली सराफ अपने 'एक भिन्न आस्वाद: रेत समाधि' में कहते हैं कि "आकाश छूने की ललक लिए एक नये तेवर में पुराने स्त्री-खोल से बाहर आ निकलती हैं। पुरूषसत्तात्मक व्यवस्था में अदृश्य बनीं, दबी हुई वे अपने खोये वजूद को दृश्यमान करती, घर समाज की हदों को ही नहीं वरन् विभाजित देश की सरहदों को पार करने का हौसला लिए ज़िंदगी के ताज़े झोंकों से भरपूर हो सामने आती हैं। अतीतजीवी बनीं वे ज़िंदगी को अपने नज़रिये से जीने की चाहत लिए उपस्थित होती है"।[1]

बेटी

बेटी भी उपन्यास का मुख्य पात्र है। बेटी की पहले शादी हुई थी लेकिन वह ज्यादा देर तक चली नहीं। बेटी को रोज़ी से बहुत जलन होती है। वह एक मॉडर्न लड़की है। बेटी अपनी जिंदगी अपने तरीके से जीना चाहती है। बेटी एक खुले विचारों वाली

लड़की है। वह खुद कमाती है। बेटी को अपनी मां के अलावा किसी और का छूना पंसद नहीं । बेटी के पास उसका कूद का घर है। बेटी अम्मा को बहुत चाहती है। बेटी अम्मा का बहुत ख्याल रखती है उसे किसी चीज़ की कभी कमी नहीं होने देती यहां तक कि वह अम्मा की खुशी के लिए उसके साथ पाकिस्तान चली जाती है। बेटी को सभी चीजें साफ सुथरी चाहिए। बेटी को प्रकृति से लगाव नहीं है। वह अपने मन की मालिक है। बेटी को अपने आस पड़ोसी से मिल-जुलकर रहना पसंद नहीं है।

सिड

अम्मा के बेटे का बड़ा बेटा सिड अम्मा का पोता है। सिड एक बहुत ही शरारती लड़का है। वह हमेशा अम्मा को हंसाने के लिए कई उटपटांग हरकतें करता रहता है। उसे गाना गाने का बहुत शौक है। सिड बहुत ही मिलनसार लड़का है। उसे मौज मस्ती करना पसंद है। अम्मा केवल सिड को ही 'नहीं' यह शब्द नहीं कह सकती है। सिड को अपने दोस्तों के साथ समय बिताना अच्छा लगता है। सिड क्रिकेट का बहुत ही बड़ा फ़ैन है।

बड़े

बड़े यानी अम्मा का बेटा। बड़े की सभी घरवालों पर हुकुमत हैं। बड़े को अम्मा से केवल पैसों के लिए ही लगाव है। बड़े बहुत ही स्वार्थी हैं। बड़े एक सरकारी नौकर है । बड़े का रौब पूरे परिवार वालों पर है। उसका कहना सब मानते हैं। बड़े को लड़कियों का अपनी इच्छा के मुताबिक जीना पसंद नहीं है। उन्हें अम्मा केवल

साड़ी में ही अच्छी लगती है । बड़े एक तरह से स्त्रियों के पहनावे, रहन-सहन को बदलते नहीं देख सकते, उन्हें स्त्रियो का परंपराओं के विपरित जाना पसंद नहीं है। बड़े घर के बड़े हैं लेकिन वह बिना किसी कारण अपने बड़ों पर नहीं चिल्लाते।

बड़े की पत्नी

बड़े की पत्नी पूरे घर वालों का ध्यान रखती है। वह अम्मा की सभी चीजों का ख्याल करती है। बड़े की पत्नी को बेटी का उनके घर आना पसंद नहीं है। अम्मा की साड़ियों पर उसकी हमेशा नज़र रहती है। बड़े की पत्नी उसके बेटे से बहुत प्यार करती है। बड़े की पत्नी मानती हैं कि बेटी अम्मा का सही से ख्याल नहीं रखती है। बड़े की पत्नी को अम्मा का बेटी के यहां जाकर रहना पसंद नहीं। वह बार-बार बड़े से अम्मा को वापस लाने के लिए कहती है। बड़े की पत्नी सोचती है कि हमने अम्मा की इतने सालों से देखभाल की और अंतिम समय में अम्मा बेटी के यहां चली गई जिसके कारण बड़े की पत्नी सोचती है कि हमने जो भी किया वह व्यर्थ हो गया ,लोग तो अब बेटी की ही प्रशंसा करेंगे।

सिड का छोटा भाई

सिड का छोटा भाई जिसका नाम नहीं आया सिर्फ सिड का छोटा भाई ही करके आया है जो फिलहाल जॉब के लिए विदेश में रहता है। वह सिड जैसा बिल्कुल भी नहीं है। वह बहुत ही शांत स्वभाव का है, गंभीर है, वह कभी खेलकूद नहीं करता। वह अपने काम से काम रखता है और जितना जरूरी है उतना ही बोलता है और कभी फालतू बातों पर समय नहीं बिताता है। किसी समस्या के बारे में ही बातें करता है।

सही समय पर खाना पिना करता है और कभी खाली नहीं बैठता। हमेशा किताब पढ़ते रहता है। उसे इतिहास के बारे में बहुत कुछ पता है। हमेशा अपनी मां यानी कि बड़े की पत्नी की फ़िक्र करता रहता है। वह मां का लाड़ला है उसे हंसने की बीमारी है। वह समाज में जो भी बुरा घटित हो रहा है उससे बहुत परेशान है। विदेश से अपने परिवार के लिए जरूरी चीजें भेजता है।

एरिल्ड

बेटी का प्रेमी हैं। वह गोरा है उसकी आंखें और बाल सफेद है। उनका और एक नाम है’ केके’ । केके बहुत ही मिलनसार है। उसके मन में दया भावना है। केके को सबसे मिल-जुलकर रहना पसंद है। केके को दोस्त बनाना पसंद है। केके को पता है कि कौन उसके बारे में क्या सोचता है। उसका कोई और मज़ाक उड़ाए उससे पहले ही वह खुद का मजाक उड़ाता है। केके किसी भी व्यक्ति को चाहे वह एक स्त्री हो , पुरुष या किन्नर हो किसी में भेद भाव नहीं करता। उसके मन में किसी के प्रति हीन भावना नहीं है।

रोज़ी/रज़ा

रोज़ी के दो रूप है। वह एक किन्नर है जिसके कारण वह दो रूपों में सामने आती है। एक है जब वह लड़कियों की तरह कपड़े पहनती है तब वह रोज़ी की तरह रहती है और दूसरा जब वह लड़कों के कपड़े पहनती है वह रज़ा की तरह रहती है। रोज़ी और रज़ा यह दो अलग पात्र नहीं बल्कि एक ही पात्र है जिसके दो रूप और दो नाम है। रोज़ी को सभी घर वाले बुआ कहते हैं। रोज़ी अम्मा के दिल के बहुत ही नज़दीक है

। वह सभी से बहुत अच्छे से पेश आती है । रोज़ी सभी की मदद करती है । अम्मा को रोज़ी के साथ समय गुज़ारना अच्छा लगता है । रोज़ी एक किन्नर होने के बावजूद उसका अपना घर है । घर की वजह से शकीला रोज़ी को जिंदा मार देती है । रोज़ी आम इंसानों की तरह जीना चाहती है । रोज़ी को पता है कि किन्नर होने के नाते लोग उसके प्रति क्या सोच रखते हैं । रज़ा कपड़े सिलाई का काम करता है । अम्मा के कपड़े रज़ा ही सिलता है ।

अनवर

अनवर अम्मा का शौहर है । अम्मा और अनवर विभाजन के दौरान एक दूसरे से अलग हो गए थे । अनवर अम्मा से बहुत प्यार करता है । अनवर यह मुसलमान है । अनवर अपनी गलती के लिए अम्मा से माफी मांगता है । अनवर बीमार था जब अम्मा और बेटी पाकिस्तान आए थे । जब अम्मा की ज़िद की वजह से अम्मा को अनवर से मिलाने के लिए ले जाया गया तब अम्मा के छूते ही अनवर के शरीर में हलचल हुई जो शरीर काफी देर से स्थीर था । अनवर को अभी तक अम्मा याद है । अम्मा हिंदू और अनवर मूसलमान , यह जानते हुए भी की अम्मा हिंदू है, अनवर ने अम्मा से प्रेम किया । पर आज एक ही धर्म में जाति के बाहर शादी के लिए कोई नहीं सोचता उसे जमाने में अनवर अपने धर्म से अलग धर्म की लड़की से प्यार करना और उससे शादी करना यह उसकी सोच को अलगाता है ।

अली अनवर

अली अनवर पाकिस्तान फ़ौज का स्पेशल ऑफिसर है। अली अनवर अम्मा के पहले शौहर का बेटा है। अली अनवर के मन में दया भावना है लेकिन वह कभी उसे सामने नहीं लाता क्योंकि वह एक फ़ौजी है। एक फ़ौजी होने के कारण उसे पर बहुत जिम्मेदारियां हैं। अली अनवर अम्मा को अनवर से मिलाता है लेकिन उसकी ना समझी के कारण अम्मा पर गोली चलती है। अली अनवर को अपनी नौकरी के बारे में बहुत चिंता है। लोग क्या सोचते हैं मेरे बारे में इसकी उसे बहुत चिंता है।

गौण पात्र

कामवाली

कामवाली वह लड़की जो बड़े के घर में काम करती है। खाना बनाना, बर्तन धोना यह उसका काम है। वह सभी घरवाले जो भी काम करने के लिए कहते हैं वह करती है। जब बड़े और बड़े की पत्नी की नोक-टोक के बीच उसे किसी एक का पक्ष लेना होता है। तब वह डर जाती है क्योंकि अगर वह बड़े का पक्ष लगी तो बड़े की पत्नी को गुस्सा आएगा और बड़े की पत्नी का पक्ष लिया तो बड़े को गुस्सा आएगा और कहीं गुस्से में आकर मुझे नौकरी से न निकाल दे इस कारण वह डरी रहती है।

बच्चा

सिड का छोटा भाई जब समुद्र किनारे बैठा था तब उस बच्चें ने उसे थप्पड़ मारा था और हंसने के लिए कहा था। वह बच्चा गोल मटोल आकार का है। वह एक है जिसके कारण बच्चा होने की वजह से वह लोगों को परेशान करता है।

जूलियस

जूलियस यह एक पालतू कुत्ता है। सिड का भाई जहां रहता है वह उसके पड़ोसी का पालतू कुत्ता है । सिड के छोटे भाई को हंसी न आना यह परेशानी उस कुत्ते को पता है।

रामदेई

रामदेई बड़े के घर का नौकर है। जब बड़े की रिटायरमेंट की पार्टी थी तब वह पार्टी में मदद कर रहा था।

नबीना

नबीना यह एक पीर बाबा है। नबीना इंनसानों को देखकर उनकी परेशानी क्या है यह बताती है। उसका पूरा वेश बाबाओ की तरह है। गले में हाथों में आभूषण पहने हैं। वह हमेशा ध्यान की अवस्था में बैठी रहती है।

कस्टम विभाग की सिनियर रिटायर्ड अफ़सर

उनके दुनिया भर में घर है। जब चाहा वह उनके किसी घर में चली जाती है। उनका गोवा में भी एक घर है। जब बड़े की रिटायरमेंट पार्टी थी तब वह नहीं आ पाई क्योंकि वह उसके विदेश के घर गई हुई थी।

यादव जी

यादव जी वह है जिन्हें बड़े ने बहुत मदद की है। यादव जी के बड़े बेटे को बड़े ने ही नौकरी पर लगाया था। यादव जी इस कारण बड़े की पार्टी में शामिल है और लोहिया बनाकर लोगों को खिला रहे हैं।

विलासराम

जो 10 साल की उम्र में घर छोड़कर भाग गया था जिसे बड़े ने आश्चर्य दिया था। जो पहाड़ों से भागा था और बार बार फेल होने पर दसवीं पास कर शर्त के अनुसार नौकरी के लिए लग गया। और जरूरत पड़ने पर अपने परिवार के साथ बड़े के यहां आ जाता।

रूपा

यह विलासराम की पत्नी हैं।

पलटू

पालतू यह गेंदा का पति है जिसे बड़े ने माली फिट कर दिया था जब वह एटॉमिक एनर्जी गेस्ट हाउस में आया था। वह हफ्ते में बड़े के लिए दो गुलदस्ते बनाकर लाता है।

कंठेराम

कंठेराम यह विलासराम का ताऊ है। जब कंठेराम शहर में आया था तब वह शहर की चकाचौंध को देखकर यह सोचकर कि शहर में अच्छे से दिन गुजरेंगे वह हमेशा के लिए शहर में ही बस गया।

रतीलाल

रतीलाल को बड़े के सिफारिश पर बड़े ने उसे नौकरी पर लगाया था। लेकिन वह दो बार काम छोड़कर आ गया था क्योंकि उसे अच्छी नौकरी करनी थी। उसे केवल सरकारी नौकरी चाहिए थी। रतीलाल को छोटे कामों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। रतीलाल की बेटी बड़े को पाप और बड़े की पत्नी को मम्मी कहती थी।

सुशीला

सुशीला कंठेराम की बहू है।

लीलावती

लीलावती की सास सुशीला है। लीलावती कंठेराम की पत्नी है। उसको हमेशा जोड़ों में दर्द रहता है। वह बार-बार पैर पसारकर बैठी रहती है। इसका एक कारण

यह भी हो सकता है कि उसे कोई काम न करना पड़े इसलिए वह जोड़ों के दर्द का बहाना बनाती हो।

कृपाशंकर

बड़े की पार्टी के दौरान कृपाशंकर खाना ले जाकर खाना मेज़ पर सजाता है। वह बड़े की पार्टी में मदद करत है।

लाल्टु

बड़े की पार्टी में लाल्टु बियर को गिलास में डाल रहा है। वह बड़े की पार्टी में मदद कर रहा है।

सलोनी

सलोनी एक गवर्नर की यंग एट हॉट एक्स बीवी है। वह साड़ी पहनती है। वह हमेशा चर्चा का विषय बनती है कि वह कभी एक बार पहनी साड़ी फिर नहीं पहनती।

ब्रिगेडियर तोताराम

ब्रिगेडियर तोताराम एकदम कड़क प्रेस किए हुए कपड़े ही पहनते हैं। वह एकदम कड़क प्रेस किए हुए पतलून और कमीज़ में ही सोते हैं। यहां तक पॉलिश किए हुए फीते बंधे जूते बिस्तर पर उतरते है भी या नहीं। किसी का मानना है कि वह अंडरवियर भी प्रेस किए हुए पहनते हैं। यहां तक कि वह अंडरवियर उतारते हैं भी या नहीं किसी को पता नहीं था।

सुशीला

सुशीला यह बड़े के घर में काम करने वाली नौकरानी है। वह सुबह पूजा पाठ करती है।

हीरो

उसका असली नाम चम्मक है। वह लीलावती का बेटा है जिसे बड़े ने नौकरी पर लगाया था लेकिन जिसकी मूर्खता के कारण निकाला गया फिर भी बार-बार सिफारिश करने पर बड़े उसे नौकरी पर लगाते हैं लेकिन वह अपनी मर्ज़ी का मालिक होता है और तुरंत नौकरी छोड़ देता है। उसे कुछ सोचने समझने की सूझ नहीं है।

लच्छू चाचा

लच्छू चाचा एक बावर्ची है। वह रसोई का काम संभालते हैं। वह बड़ा अच्छा खाना बनाते हैं उनके इस खूबी की वजह से सभी उन्हें पसंद करते हैं ।

शीला/ शकील

शीला यह रोज़ी की किराएदार है। अपने स्वार्थ के लिए दूसरे के बारे में नहीं सोचती । झूठ बोलकर लोगों को फंसाती है। उसे गुस्सा बहुत आता है। कुछ भी करने या बोलने के पीछे दो बार नहीं सोचती।

राहत साहब

राहत साहब को सड़क पसंद थी। राहत साहब को बेटी और अम्मा की जिम्मेदारी सौंप गई थी। उन्होंने अपना काम खूब निभाया। राहत साहब कभी किसी के जिंदगी

में दखलंदाजी नहीं करते हैं न ही उन्हें परेशान करते हैं। वह सोच समझकर निर्णय लेते हैं और अपने राही को मशवरा भी देते हैं।

इंटेरोगेटर

इंटेरोगेटर यह पाकिस्तान फ़ौज में से एक इंटेरोगेटर है जो अम्मा और बेटी से सवाल कर रहा है। वह अपना काम कर रहा है। वह बहुत जल्दी परेशान हो जाता है और उसे बहुत गुस्सा आता है। अपना काम सही से करता है।

नवाज़ भाई

नवाज़ भाई पाकिस्तान के ही एक फ़ौजी है। नवाज़ भाई वह इनसान है जिन्होंने मां और बेटी की पाकिस्तान में मदद की जब वह दोनों कैद थीं। उन्होंने अम्मा को पौधे लगाकर भी दिए। वे सब का ख्याल रखते हैं।उनके मन में ऐसी कोई हीन भावना नहीं है कि वह अलग देश का है और वह उनकी क्यों मदद कर रहा है।

रेत समाधि उपन्यास का कथानक पूरा अम्मा पर आधारित है। अम्मा का पीठ करके रहने से लेकर पाकिस्तान बॉर्डर पार करके अपने प्रेमी से मिलने जाना यह उपन्यास में मुख्य रूप से आया है। रेत समाधि उपन्यास में जो भी पात्र आए हैं वे चाहे मुख्य पात्र हो या गौण पात्र हो उनका उपन्यास में खास किरदार है। रेत समाधि उपन्यास में परिवेश के हिसाब से ही जिस तरह पात्र होने चाहिए उन्हें पेश किया गया है।

संदर्भ

गीतांजलि श्री,रेत समाधि,राजकमल प्रकाशन,२०१८

1 डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान, गीतांजलि श्री कृत रेत समाधि उपन्यास एक मूल्यांकन, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2023

चतुर्थ अध्याय

रेत समाधि उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन

चतुर्थ अध्याय:-रेत समाधि उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन

4.1 रेत समाधि में चित्रित विभिन्न समस्याएं

'रेत समाधि' यह उपन्यास अम्मा की प्रेम कहानी को बयां करता है इसी के साथ इस उपन्यास में कई विषय हैं जो प्रस्तुत हैं

संयुक्त परिवार का टूटना

'रेत समाधि' उपन्यास में संयुक्त परिवार टूटने के संबंध में यह पता चलता है कि संयुक्त परिवार अलग होने के कारण एक तो बेटों को देश जाकर रहना पड़ता होता है। उन्हें अपनी नौकरी के लिए विदेश जाना पड़ता है और नौकरी की वजह से

ही वे हमेशा के लिए वहीं बस जाते हैं। एक अलग घर में परिवार से दूर। एक और वजह है जिस के लिए संयुक्त परिवार टूटते हैं वह है बेटों की अच्छी नौकरी के लिए भाई अपने परिवार से दूर होकर रहते हैं जहां पर उन्हें सारी सुख सुविधाएं प्राप्त हों। गांव में रहने से अच्छी नौकरी प्राप्त नहीं होती जिस कारण अगर किसी बड़े संयुक्त परिवार के बेटे को नौकरी मिलती है तो वह शहर में जाकर अपना एक अलग घर खरीद कर वही बस जाता है। जिसके कारण एक परिवार गांव में तो दूसरा शहर में बस जाता है। उसी तरह 'रेत समाधि' में छोटा बेटा 'बड़े' नौकरी के कारण विदेश में रहता है और वहीं बस गया है। वह कभी कबार छुट्टियों में घर आ जाता है। उसी तरह 'बड़े' अपना गांव वाला घर छोड़कर नौकरी के कारण शहर में बस गया था। 'बड़े' का छोटा बेटा नौकरी में प्रमोशन होने के बाद विदेश चला गया इसी कारण उनका संयुक्त परिवार टूट गया। लेखिका ने संयुक्त परिवार के टूटने से संबंध में व्यंग से कहा है, "जिससे संयुक्त परिवार की अदृश्य डोर दुनिया के एक और छोट को छू गयी"।[1]

वृद्धों की स्थिति

समाज में वृद्धो की स्थिति बहुत ही खराब है। माता-पिता अपने जिन बच्चों को पढ़ा-लिखा कर बड़ा बनाते हैं वही बच्चे मां-बाप बूढ़ा होने पर उन्हें वृध्दाश्रम छोड़ जाते हैं। बच्चों को अपने मां-बाप बोझ से लगने लगते हैं। वृद्धों पर कोई ध्यान नहीं देते। जब तक उनके पास पैसा है तब तक ही उनका रुतबा है नहीं तो कोई अहमियत नहीं

रहती है। जिन बूढ़ो के पास पैसा होता है उन्हीं को अपनी वृद्धावस्था में स्वाभिमान से रहने को मिलता है। जिनके पास पैसा नहीं होता है उन्हें ठीक से नहीं रखा जाता उन पर जुल्म होता है। माता-पिता अपने बच्चों के खातिर कितनी ही इच्छाओं का गला घोट देते हैं ताकि उनके बच्चों की इच्छाएं पूरी हों और वहीं बच्चे उनके बूढ़ापे का सहारा तक नहीं बन पाते हैं। 'रेत समाधि' उपन्यास में 'अम्मा' की उम्र 80 साल की है पर उनके पास पैसा होने के कारण ही उनका बेटा उसका ध्यान रखना है। "बड़े सबसे चुप और सब से चिन्तित दीखते। एक तरफ़ तो ये कि अम्मा को जल्दी ठीक करें और ले जाएं, दूसरी तरफ़ ये चिन्ता कि ऑपरेशन थिएटर में उनके जाने के पहले कुछ चैक और कुछ शेयर के कागजों और शहर से दूर वाली ज़मीन वाले पर भी, जिसकी आख़िरी किस्त देनी बाकी थी, साइन ले लें"।[4] ये 'बड़े' के आंतरिक भाव हैं। इस वाक्य से पता चलता है कि बड़े को मां के पैसों की ही चिंता थी। यह उस समय की बात है जब 'मां' का ऑपरेशन होने वाला होता है तब 'बड़े' को मां की नहीं पड़ी होती है उन्हें सिर्फ 'अम्मा' से चैक साइन करवाना होता है। उन्हें 'अम्मा' से कोई प्रेम या लगाव नहीं है बल्कि उन्हें मां के पैसों से लगाव है। वह 'अम्मा' की सही सलामती की सोचने के बजाय चेक के बारे में सोचते है। पैसे हैं तो सब है। 'बड़े' जब अपने नए घर में जा रहे होते हैं तभी उन्हें यह चिंता होती है कि वह 'मां' को कहां रखेंगे। बूढ़े होने पर बच्चे अपने मां-बाप के बारे में अक्सर ऐसा ही सोचते हैं। उम्र के इस पड़ाव में वह पहले से ही परेशान होते हैं और

बच्चों का ऐसा व्यवहार उन्हें और असहाय बना देता है। उन्हें बूढ़ापे में क्या चाहिए होता है? दो वक्त की रोटी और बच्चों का प्यार। वह भी उन्हें ठीक से नहीं मिलता। इसी कारण इनसान बूढ़ा होकर नहीं जीना चाहता। माता-पिता बच्चों की छोटी-छोटी चीजों और बातों का पूरा ध्यान रखते हैं लेकिन उन्हें वापस कुछ नहीं मिलता।

किन्नरों के प्रति लोगों का दृष्टिकोण

किन्नरों को हमेशा इस समाज द्वारा नकारा गया है। उन्हें इस समाज का हिस्सा नहीं माना जाता है। उन्हें अलग रखा जाता है। किन्नरों को इस समाज द्वारा नहीं अपनाने कि वजह से उन्होंने अपना समाज बनाया है। किन्नर मनुष्य होने के बाद भी उन्हें इस समाज द्वारा अपनाया नहीं जाता। जिस समाज में स्त्री और पुरुष में भेद होता है उस समाज में किन्नरों को कहां से स्थान मिलेगा। आज भी किन्नर अपने हक के लिए जूझते है। कानूनी तौर पर उन्हें हक तो प्राप्त हुए हैं लेकिन वह केवल कागज तक ही सीमित है। उन्हें समाज द्वारा आज भी वैसे ही देखा जाता है जैसे उन्हें पहले देखा जाता था। लोगों का किन्नरों के प्रति दृष्टिकोण अभी तक नहीं बदला। आगे चलकर बदल सकता है। किन्नरों को उनकी हर बात के लिए नकारा जाता है। 'रेत समाधि' में 'रोज़ी बुआ' जो एक किन्नर है वह सिलाई का काम करती है। 'अम्मा' और 'रोज़ी' दोनों बड़े अच्छे दोस्त हैं। 'रोज़ी' जो है लड़कियों के कपड़ों में 'रोज़ी' बन कर रहती है और लड़कों के कपड़ों में 'रज़ा'। उसके दो रूप हैं।

'रोज़ी' और 'अम्मा' की इतनी नज़दीकी होने पर भी 'बेटी' को 'रोज़ी' अच्छी नहीं लगती क्योंकि वह एक किन्नर है। 'अम्मा' और 'केके' के अलावा घर में और कोई भी उसे नहीं अपनाया। सबका ध्यान रखती है। 'रोज़ी' हमेशा 'अम्मा' से कहती है कि उसे कोई नहीं पूछता क्योंकि वह एक किन्नर है और अक्सर किन्नरों के साथ ऐसा ही होता है। 'रोज़ी' जो थी उसने परिश्रम करके घर खरीदा था जिसमें किराएदार रहते थे। किराएदारों ने घर के लालच में 'रोज़ी' को मार दिया और कहने लगे कि इन जैसों को इस तरह जीने का कोई अधिकार नहीं है। जब 'रोज़ी' गायब थी तब 'अम्मा' पुलिस वालों के पास गई थी रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए लेकिन पुलिस वालों ने भी 'अम्मा' से कहा कि आप इन बातों में न पड़े इनको यानी किन्नरों को हम लॉकर में भी नहीं रखते, इनके बारे में चिंता करना बंद कर दे। इस तरह पुलिस वाले ने किन्नरों के उपर बहुत बातें सुनाई और अम्मा को जाने के लिए कहा। "हमारी नींद हराम और आप फिर पहुंच गए पूछने कि उस बहरूपिया को खोद निकाला ? आप ये बताइए कि जिसका ये ही नहीं पता कि क्या उसमें असली क्या नकली उसका क्या ढूंढ़ें साहब ? इंसान है कि जिन्न ?"।[5] जब 'रोज़ी' गायब थी तब 'मां' बार-बार पुलिस थाने के चक्कर काटतीं ताकि 'रोज़ी' का पता करवा सके लेकिन पुलिस बार-बार 'अम्मा' को उनके बारे में चिंता करने से मना करते क्योंकि 'रोज़ी' एक किन्नर थी लेकिन मां ने भी उनकी एक न मानी और आखिरकार पता चला कि मकान के लिए 'रोज़ी' को किराएदार ने मार

दिया। ‘रोज़ी’ ने कभी किसी का बुरा नहीं चाहा था। वह सभी का भला ही सोचती थी। पुलिस वालों की ही किन्नरों का प्रति ऐसी सोच होगी तो आम जनता की सोच क्या ही होगी। पुलिस ‘रोज़ी’ का घर देखकर कहती है कि कहां से इन जैसों को पैसे मिले और घर खरीद लिया। किन्नर ताली बजा कर अपना पेट पालते हैं क्योंकि उन्हें कोई नौकरी नहीं देता और ताली बजाकर पैसे पाकर अपनी भूख शांत करने पर भी उन्हें लोग गलत कहते हैं और वहीं अगर कोई किन्नर काम करके अपना पेट पालता है तब भी उन्हें लोग गलत ही कहते हैं। मतलब अगर वे काम करके जिंदा रहे या फिर ताली बजाकर जिंदा रहे उन्हें तो लोग गलत समझेंगे ही। वे भी इनसान हैं। उन्हें भी जीने का हक है और जीने के लिए पेट भरने की आवश्यकता होती है। वह किन्नर है इसलिए समाज उनके साथ ऐसा बर्ताव करता है। भले तन अलग है लेकिन दिल और दिमाग बाकियों की तरह ही है। फिर भी उनेके साथ भेदभाव किया जाता है। किन्नर होना समाज में पाप समझा जाता है और उनके पैदा होने पर एक तो उन्हें मार दिया जाता है या फिर उन्हें किन्नरों के समाज में छोड़ दिया जाता है। कम ही माता-पिता होते हैं जो अपना बच्चा किन्नर होने के बावजूद उन्हें अपनाते हैं। समाज फिर भी उन्हें परेशान करता है। खुद उनके मां-बाप को ऐतराज नहीं होता लेकिन समाज उन मां-बाप को मजबूर करता है जिसके कारण मां-बाप लोगों का कहा मानकर उन्हें अलग कर देते हैं और यही उनकी अशिक्षा का कारण है। जन्म के तुरंत बाद किन्नरों को उनके समाज में रख दिया जाता है, जहां पर उन्हें सही से खाने के लिए भी नहीं मिलता है।

पितृसत्तात्मक समाज

'रेत समाधि' यह उपन्यास जो कि पूरा दो औरतों पर आधारित है। 'रेत समाधि' उपन्यास दो औरतों के इर्द-गिर्द घूमता है। स्त्री इस उपन्यास के मुख्य पात्र के रूप में आती हैं। रेत समाधि में भी तीन स्त्रियां है जो इस समाज से प्रताड़ित होती आई हैं। स्त्री समाज में हमेशा से ही प्रताड़ित होती आई है। समाज में पितृसत्ता होने के कारण स्त्रियों को कई परेशानियों से गुज़रना पड़ता है। रेत समाधि में तीन स्त्रियां प्रमुख हैं जो पितृसत्तात्मक समाज से प्रताड़ित हैं वे हैं 'अम्मा', 'बेटी' और 'बहू'। 'अम्मा' को पितृसत्ता के कारण, वह जैसे जीना चाहती थी उसे उस तरह जीने को नहीं मिला लेकिन जब उनके पति की मृत्यु हुई वह स्वार्थी बनकर अपने जीवन के बारे में सोचने लगी वह जैसा करना चाहती थी उस तरह करने लगी जिसमें उसे उसकी 'बेटी' ने बहुत साथ दिया । 'अम्मा' जब स्वार्थी बन जाती है वह सब को भूल जाती है। दूसरी स्त्री है 'बेटी' । 'बेटी' और 'अम्मा' ये दो औरतें हैं जिनका जिक्र 'रेत समाधि' में बार-बार आया है। 'बेटी' खुले विचारों वाली है जो किसी बंधन में नहीं रहना चाहती। वह अपनी ज़िंदगी बिना किसी रोक-टोक के जीना चाहती है। पर उसका भाई 'बड़े' उसे उस तरह की जिंदगी जीने नहीं देता जिस कारण 'बेटी' 'बड़े' का घर छोड़ कर चली जाती है। "वैसे इसे देखते रहो पररखते रहो का बहनों बेटियों से जन्मजन्मांतर का रिश्ता है। तभी वह परिवारों से भागना चाहती हैं और दरवाजे पर एक पैर उठाये सोच में पड़ जाती हैं कि उन्हें भीतर जाना है

या बाहर ? इसी हेरफेर में एअरपोर्ट पहुंच जाती हैं। एक चौकसी से भाग दूसरी मैं आ गिरती हैं। जानी पहचानी सी चिढ उठती है और जाहिर सी बात है कि हवाई अड्डे बुरे लगने लगते हैं। "[2] यह लेखिका ने व्यंग्य में कहा है। बेटियों को जितना जकड़ोगे उतना ही वह मजबूर होती है उन जकड़नों से भागने के लिए। बेटियों को अगर उनकी मर्ज़ी से जीने नहीं दिया जाता तो वह खुद को असहाय महसूस करती हैं और वे बंधन तोड़कर भाग जाती हैं। कई बेटियां उसे सह लेती हैं पर 'रेत समाधि' में बेटी भाई की रोक-टोक को सह नहीं पाती और भाग जाती है और खुद का घर खरीदकर अपने तरीके से रहने लगती है। जिसे आज मॉडर्न तरीके से 'लिव्ह इन रिलेशन' में रहना कहते हैं। जहां पर स्त्री और पुरुष बिना शादी किए साथ रहते हैं।

अगली जो स्त्री उपन्यास में प्रताड़ित होती है वह है 'बहू' । 'बहू' 'मां' का पूरा ध्यान रखती है फिर भी 'बेटी' और 'बड़े' उसे मां का सही से ध्यान न रखती है इसके लिए उसे बुरा कहते है। समाज में ऐसा ही होता है कि बहू घरवालों के लिए कितना भी कर ले लेकिन बहू को कोई अहमियत नहीं देता। घर में कुछ भी बुरा हो गया तो दोषी बहु को ही समझा जाता है। चाहे बहू सही हो या गलत। वह भी तो एक इंसान है। सभी काम अकेली नहीं कर सकती फिर भी उसे ही सुनाया जाता है, बेटे को कोई कुछ नहीं कहता। 'रेत समाधि' में भी 'बहू' की कोई अहमियत नहीं। बहू ही वह स्त्री होती है जिसका घर नहीं होता है, मायके वाले कहते हैं ससुराल तुम्हारा घर है और ससुराल वाले कहते हैं अपने घर जाकर यह सब करना। 'रेत समाधि' में 'बहू' के बेटे को ही 'बहू' की चिंता है बाकियों को नहीं। उसे

बिना पूछे उसकी चीजों को हाथ लगाया जाता है। "पत्नी की आंखें फटीं कि मेरी अलमारी से ये कब इन्हें निकल लाये और पुराना घाव हरियाया कि मेरी चीज़ कभी मेरी नहीं रही , ससुराल में जो चाहा उन पर हाथ मार ले , मेरे बच्चों तक को मुझे पालने दिया, कभी बुआ जी की गोदी, कभी दादा दादी की, और घर तो जग भर की सराय, मुझे पता है क्या कि अपना घर किसे कहते हैं, ननद तो जब चाहा रुक जातीं, अम्मा मेरी नाईटी बिना मुझसे पूछे दे देतीं कि आज यहीं रुक जाओ और तो और जिसका जी हो आकर मेरी विंडो सीट पर बैठ जाता है जहां से मैं अपना पढ़ना रसोई पर नज़र रखते हुए कर सकती थी। फिर इलज़ाम दें की बहू को घर के कामों में दिलचस्पी नहीं रही।"[3] यह 'बहू' के आंतरिक विचार है।

समाज में पुरुषों को ज्यादा महत्व दिया जाता है। उनके आगे स्त्रियों की कोई अहमियत नहीं होती। जिंदगी के फैसले करना पुरुषों के हाथों होना ही पुरुष सत्ता कहलाती है। समाज में पुरुषों की बातों को अहमियत देना और स्त्रियों को उनके आगे झुकने के लिए विवश करना पितृसत्तात्मकता कहलाती है। वह चाहे किसी भी स्त्री पर हो। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियों को अपने मन के मुताबिक जीने को नहीं मिलता, वह जैसे चाहे वैसे नहीं घूम सकती। समाज में पुरुषों की सत्ता होने के कारण स्त्रियों को स्वतंत्रता नहीं मिलती । पुरुष उन्हें अपने अनुसार जीने के लिए कहता है और स्त्रियां मान जाती हैं क्योंकि उन्हें विवश किया जाता है। पुरुषों के बिना भी स्त्री कुछ कर सकती है लेकिन हमेशा स्त्रियों को सिखाया जाता है कि उसे पुरुष की जरूरत है वह पुरुष के बिना कुछ नहीं। बचपन से ही पुरुषों को सिखाया जाता है कि स्त्री को अहमियत नहीं देनी। उन्हें हमेशा अपने नीचे ही रखो। कोई पुरुष अगर किसी

स्त्री पर हुकूमत नहीं करता तो उसे नामर्द कहा जाता है जिस कारण जो पुरुष इस तरह नहीं करना चाहता मजबूरी में कर जाता है। 'रेत समाधि' में पितृसत्ता ‘बेटे’ के माध्यम से दिखाई पड़ती है। ‘ बेटे’ का रौब सब पर है। वह पूरे परिवार को देखाता है। उसे बेटियों का अपनी सीमा लांघना अच्छा नहीं लगता। पहले यह सब उनके पिताजी और ‘अम्मा’ का पति देखाता था जो अब इस दुनिया में नहीं रहा इसलिए उनके ‘बेटे’ के पास आ गया और बेटे के बाद वह बेटे के बडे बेटे ‘सिड ’ के पास चला जाएगा। पितृसत्ता यही होती है। जब ‘बेटी’ ‘बड़े’ की रोक-टोक के कारण घर छोड़कर चली जाती है तब ‘बड़े’ उनसे अपने सारे नाते खत्म कर देते हैं। पर वह बाद में बात करने लगता है। लेकिन पहले वह मां तक को बहन से फोन पर बात करने के लिए मना करता है। मां को बहन से मिलने जाने के लिए तो कतई मना करता है। ‘बड़े’ की हुकूमत सब पर है और उसका कहना सब लोग मानते हैं। वह ‘अम्मा’ का ‘बेटा’ होने के बावजूद अम्मा को उसकी सुननी पड़ती है क्योंकि वह उस घर का अब बड़ा मर्द है और स्त्री को मर्द की हमेशा सुननी पड़ती है चाहे वह उससे बड़ा हो या छोटा।

सांप्रदायिकता

आज समाज में धर्म को लेकर बहुत ही विवाद हो रहे हैं। धर्म के नाम पर इनसान इनसानों को मारने पर उतावला हो रहा है। धर्म के आगे उन्हें कुछ सूझता ही नहीं।

अपने धर्म को ही श्रेष्ठ मानना और बाकी धर्मों को अहमियत न देना यह आज की दुनिया में चल रहा है। ईश्वर तो सब का एक ही है। अगर ईश्वर एक है तो धर्म के नाम पर झगड़ने की क्या जरूरत। जहां पर भगवान की बात की जाए वहां अपने भगवान को पूजना और दूसरे धर्म के भगवान को भला बुरा कहना यह गलत बात है। अपने भगवान के साथ-साथ दूसरे धर्म को को भी सम्मान की नज़र से देखना चाहिए। धर्म अर्थातआस्था पर वह आस्था इतनी नहीं बढनी चाहिए कि आप एक दूसरे को मारने के लिए तैयार हो जाएँ। धर्म कभी इस तरह करने के लिए नहीं कहता बल्कि धर्म एक शांति का प्रतीक है जिसके कारण आज अशांति फैल रही है। 'रेत समाधि' में धर्म का ज़िक्र कई बार आया है। 'बेटी' जो है उसके माध्यम से धर्म के बारे में पता चलता है। 'रेत समाधि' में धर्म पर सवाल उठाने वाली 'बेटी' ही है। 'बेटी' को जब लगता है कि 'रज़ा' और 'रोज़ी' एक ही व्यक्ति हैं तो इस बात को साबित करने के लिए 'बेटी' अम्मा से रोज़ी' और 'रज़ा' के धर्म के बारे में पूछती है जिसपर अम्मा को गुस्सा आता है और अम्मा उसे डांटा देती है कि धर्म धर्म ना करो, धर्म के नाम पर कुछ हासिल नहीं होनेवाला। "हासिल, वो इतनी जोर से बोलीं की ख़ूनी अन्दर झांकने लगे। ये ही वो लफ्ज़ जो धर्मों देशों को बरगलाता है, बांटता है। हासिल करो, अलग होकर, साथ तोड़कर। मुल्क बनाओ, मज़हब बचाओ। मुल्क बनता है कि टूटता हैं ? मज़हब बढ़ता कि सिकुड़ता है ? हासिल ? क्या होता है हासिल ? मुझे मत बताओ। मैं कुछ हासिल करने नहीं आई हूं। हिस्सा मांगने, एक और बंटवारा करवाने, ये मेरी दिलचस्पियां नहीं।"[7] यहां पर अम्मा जब पाकिस्तान

जाकर अनवर को अपना शौहर कहती है और उनसे मिलने की जिद करती है तब बेटी गुस्से में आकर मां से पूछ लेती है कि अनवर तो मुसलमान है और आप हिंदू तो आपकी शादी कैसे मुमकिन है और वह आपका शौहर कैसे हो सकता है तब मां उसे कहती है कि धर्म की बात न करो धर्म ही है जो देशों को बांटता है, इनसानों के बीच दूरी पैदा करता है। शादी के बारे में मां कहती है कि अगर दोनों परिवार वाले राजी हों तो दो धर्मों में शादी हो सकती है और मां बताती है कि स्पेशल मैरिज एक्ट 1870 को कोर्ट कानून धर्म से अलग शादी करने की इजाज़त देता है। धर्म सिर्फ इनसानों को एक दूसरे से अलग करना जानता है धर्म से कुछ हासिल नहीं होता बल्कि धर्म इंसानों को और क्रूर बनाता है।

विभाजन की त्रासदी

जिस विषय पर यह पूर्ण उपन्यास आधारित है वह है विभाजन। रेत समाधि यह उपन्यास विभाजन के कारण हुई स्थितियों को चित्रित करता है उसी के साथ विभाजन के कारण आ रही समस्याओं को भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। 'रेत समाधि' उपन्यास विभाजन पर ही आधारित है। एक 80 साल की वृध्द अम्मा अपने प्रेमी अनवर जो कि विभाजन के कारण उनसे दूर हो गया था उसे मिलने बॉर्डर पार करके जाती है। बॉर्डर पार कर जाने पर उसके साथ क्या हुआ था और क्या होता है इस उपन्यास में उजागर किया गया है। रेत समाधि में विभाजन के कारण अम्मा जिनका नाम चंदा था वह अपने प्रेमी -शौहर अनवर से अलग हो गई थी। अम्मा जो

है वह अनवर से अलग होने पर भारत पहुंच जाती है अनवर पाकिस्तान में रह जाता है । अम्मा भारत में कई दिनों तक अनवर का इंतजार करती है कि वह अम्मा को मिलेगा लेकिन वह नहीं आता है और यह संभव भी कैसे होता क्योंकि अनवर को पता नहीं था कि चंदा कहां पर है। जब अनवर घर पर नहीं था चंदा को कोई उठा कर ले गया था जिनसे भागकर चंदा भारत पहुंची और बॉर्डर खींची गई । जो पहले एक मुल्क था वह धर्म के नाम पर दो अलग मुल्क बन गए । अम्मा भारत में पहुंचने के बाद अनवर का इंतजार करती रही और फिर उसने वहां पर शादी की और उसके बच्चे भी हुए । अम्मा के पति की मृत्यु के बाद वह अकेली पड़ गई। सभी घरवालों से पीठ कर कमरें में अकेली रहने लगी और बेटी के यहां जाने के बाद फिर से जी उठी और रोज़ी से मिलकर पाकिस्तान जाने के बारे में बातें करने लगी। बेटी के साथ मां अपने प्रेमी अनवर से मिलने पाकिस्तान पहुंची, पाकिस्तान में वे बिना वीजे के घूमने लगी जिस कारण बेटी और अम्मा को पाकिस्तान फ़ौज ने कैद किया ।अम्मा और बेटी को आतंकवादी समझकर कैद कर लिया जाता है जहां पर पूछताछ करने पर मां उनको गलत जवाब देती है जिस पर अफसर गुस्सा हो जाते हैं और सही से बताने के लिए कहते हैं फिर भी , अम्मा उन्हें उसी तरह जवाब देती है और पूछने पर कि आप कहां के हो, वह बताती है कि मैं यही की हूं और अनवर से मिलने की जिद करती है । अम्मा की जिद के कारण उसे अनवर से मिलाया जाता है जहां पर अम्मा को गोली लगती है । अगर आज विभाजन न हुआ होता तो अम्मा और अनवर दूर न होते । अम्मा और अनवर की प्रेम कहानी अधूरी न होती । विभाजन की वजह से ऐसा हुआ । विभाजन के कारण कई रिश्ते टूट गए, कईयों को अपने नजदीकियों को खोना पड़ा

। विभाजन के कारण हुए नुकसान, को यह उपन्यास प्रदर्शित करता है । विभाजन के संदर्भ में कई बातें आई हैं। बेटी का अम्मा से पूछने पर कि आपके पास क्या सबूत है कि अनवर अम्मा का शौहर है तो मां कहती है "दर्ज पूछती हो ? जिन्होंने सबको इधर से उधर किया उनसे पूछो क्या क्या दर्द है ? जो आगे भागे और पीछे आग थी वो दर्ज है ? कौन सा किसका घर था और कौन से टुकड़े उसमें छूटे उसके जिगर के दर्द है ? उसका रुक्का नहीं खोजता ? और ये कि हम दो जन ऐसे हुए जिन्हें नाने और चचा ने आशीष दी, उसका पेपर मांगते हो ? ज़िक्र से निकाल दो, घर से निकाल दो, झूठ की सरहद बना दो और मान लो हम थे ही नहीं ? इस दुनिया में कितना है जो दर्ज नहीं इतिहास के पन्नों में । हवा में बह रहा है । पहचान सको तो पहचानो । उसको फेंको नहीं, इसकी इज़्ज़त अफ़्ज़ाइ़ करो ।" [8] विभाजन राजनीति के कारण हुआ जिसका परिणाम आम जनता को भुगतना पड़ा । राजनीति में अक्सर ऐसा ही होता है। सत्ता के लिए आदमी कुछ भी कर सकता है । उसका अंजाम क्या होगा यह नहीं सोचता। आज भी विभाजन के परिणाम दिखाई देते हैं।

प्रकृति

रेत समाधि में प्रकृति का बहुत ही अच्छा वर्णन मिलता है । लेखिका ने उन्हें एक जीवित प्रस्तुत किया है । जैसे कि गुलदाउदी फूल जो फूल है वह किसी तरह उनके साथ रहते आए हैं यह दिखाई देता है । वह किसी तरह खिले हुए हैं । बड़े के घर वालों को गुलदाउदी फूल बहुत ही पसंद है । आज के जमाने में प्रकृति को अपने साहित्य

में स्थान देना बहुत बड़ी बात है। जहां पर असल में सभी प्रकृति को बचाने की बजाय उसे नष्ट करने जा रहे हैं। उसी के साथ कौवा जैसे पक्षी भी रेत समाधि में शामिल हुए हैं जिन्हें एक तरह से लेखिका ने जीवित रुप में अर्थात बोलते हुए दिखाया है। कौवे के माध्यम से पता चलता है कि उन्हें भी मनुष्य के साथ रहना पसंद है लेकिन आज इनसान जानवरों से प्रेम नहीं करता। जानवरों के प्रति इनसानों की कोई दया भावना नहीं बची। अम्मा का पौधों के प्रति इतना प्रेम यह दर्शाता है कि उन्हें प्रकृति से प्रेम है। वह हमेशा पौधों का ख्याल रखती हैं। इसके जरिए लेखिका ने प्रकृति प्रेम दिखाया है।

मां-बेटी का प्यार

रेत समाधि में मां के प्रति बेटी का अपनी प्रेम व्यक्त हुआ है। बेटा जितना भी अपनी मां का ख्याल कर ले लेकिन जिस तरह एक बेटी अपनी मां की चिंता करती है वह उस तरह कभी नहीं कर सकते। बेटियां शादी के बाद भी अपनी मां को नहीं भूलतीं। उपन्यास में बेटे का मां के प्रति तो प्रेम दिखता है। इसके पीछे का कारण भी दिखता हैं। वही बेटी का मां के प्रति प्यार निस्वार्थ होता है और बेटे का स्वार्थ के लिए। रेत समाधि में जब अम्मा बेटी के यहां आती है तब बेटी अम्मा का बहुत ध्यान रखती है। बेटी तब अम्मा बन जाती है और अम्मा बेटी। वह अम्मा की छोटी से छोटी चीजों को पूरा करती है। उसे अम्मा की हमेशा फ़िक्र रहती है। बेटी अम्मा को हमेशा खुश देखना चाहती है। बेटी को हमेशा से ही अकेले रहना पसंद था जिसके

कारण वह अलग घर में रहती थी लेकिन अम्मा के आने के बाद उसे वह शांति प्राप्त नहीं होती फिर भी वह उसे सह लेती है क्योंकि उसे माँ प्रेम था। बेटी अम्मा की खुशी के लिए उसे पाकिस्तान तक ले जाती है।

4.2 भाषा

भाषा यह संप्रेषण का महत्वपूर्ण माध्यम है भाषा के माध्यम से ही साहित्य हम तक पहुंच सकता है। गीतांजलि श्री ने अपने उपन्यास रेत समाधि में हिंदी भाषा का प्रयोग किया है जिसमें कुछ हद तक उर्दू और अंग्रेजी शब्द भी शामिल हुए हैं। मुझे लगता है कि प्रस्तुत उपन्यास में है उन्होंने अंग्रेजी और उर्दू भाषा का प्रयोग पात्र अनूकूल भाषा ली है। जैसे की सिड अंग्रेजी भाषा में बातचीत करता है वही नवाज़ भाई उर्दू भाषा में बातें करते हैं।

उर्दू शब्द

रेत समाधि में उर्दू भाषा के शब्द आएं हैं जैसे कि

रोज़, सिफ़त, ज़रा, सुराख़, क़ानूनी, इजाज़त, माफ़ी, ज़मीन, शक़, नुस्खा, मनमाफ़िक, कलाबाज़ी, फ़तेह, हर्ज, रज़ाई, गिलाफ, ख़ासी, दरवाज़ें, किस्म, फ़र्श, लिफ़ाफे, फुर्तीली, खफ़ाती, मक़सद, फीता, अनख, मुलाज़मत, अफ़ीम, अफ़ीमची, ज़मींदार, फिज़ा, कूवत, नज़र, जिंदा, बेवफ़ा, मुफ़्त, मज़ा, बर्तन, मुल्क, खुशकिस्मती, जुल्फ़ों, फ़िकरा, कव्वाली, ख़बर, ग़नीमत, ख़तम, खुर्रम, अलबत्ता,

अलैदा, नज़ाकत, निज़ाम, तस्वीर, दफ़न, मार्फ़त, फ़रिश्ते, चीज़, नाख़ून, रजाई, तूफ़ानीपन, फाख्ता, रूआंसी।

अंग्रेजी शब्द

रेत समाधि में आएं अंग्रेजी भाषा के शब्द जो हैं

आर्गेनिक, लेडीज़, पार्टनर, फ्लैट, सेंसिबल, प्रॉब्लम, एन्जॉय, अनशैडूल्ड, रेपुटेशन, डर्टी, माइंड, बीहेव, टाइम, स्टार्विंग, ड्रेसिंग, गाउन, वाइब्रेशन, सीक्रेटिव, रिजर्व्ड, फैशनेबल, ब्रेक, स्पैशलिस्ट, कॉफ़ी, ब्रेकफास्ट, रिलैक्स, सरप्राइज, स्मोक, वेलकमिंगली, बिलौंग, ब्लैकबर्ड, प्रपोज़ल, प्रेजेंटेशन, फ़ेमिनिस्ट, पार्क, हैंगर्स, बुकशेल्फ़, फाइन, रजिस्टर्ड, डिस्टर्ब, कॉस्टयूम, ओफ़िशिअल, डायलॉग, कैरैक्टर, प्राइवेट, सेकेरेटरी, डायलॉग, सिंसिरयली, रिटायरमेंट, स्टॉलों, फ्रॉम, फ़ैशन, डिप्रेस्ड, अनरियल, सैटिंग, कॉर्नर।

4.3 शैली

शैली की बात की जाए तो शैली जो है कृति को अलग बनाती हैं। हर एक लेखक की अपने लिखने की शैली अलग होती है। लिखने की शैली ही एक लेखक को दूसरे लेखक से अलग बनाती हैं। गीतांजलि श्री ने अपने उपन्यास में कई प्रकार की शैली का उपयोग किया है।

वर्णनात्मक शैली

जहां पर किसी प्रसंग का वर्णन किया जाता है उसे वर्णनात्मक शैली कहा जाता है। वर्णन यानी कि उसे चीज के बारे में ज्यादा से ज्यादा बताना। उदाहरण के तौर पर-

"बेटी। बेटियां हवा से बनती हैं। निस्पंद पलों में वह दिखाई नहीं पड़ती और बेहद बारीक़ एहसास कर पाने वाले ही उनकी भनक पाते हैं। पर थमा समां ना हो और वह हिल रही हों... हाय कैसे तो वे हिलती हैं... तो आकाश नीचे को झुकने लगता है, इतना कि हाथ उठा के छू लो। खखानी धरती फटती है और बुलबुले उठते हैं और फिर कलकलाते हुए झरने निकल आते हैं। पहाड़ियां उझकती हैं। चारों ओर प्रकृति का अनोखा विस्तार खुलता है और अचानक आप समझ लेते हैं की दूरी और गहराई, दोनों की आपकी समझ गड़बड़ा गई है। जिसकी सांस बालों पे आ गिरी नर्म पंखुड़ी थी, समुन्दर में दहाड़ती चट्टान भी मरती है। जिसे दूर आप हिम पर्वत समझ रहे हैं, वह तो एकदम पास उसकी उंगली है जो नहीं पिघलेगी। आपकी अक्ल क्या चिराग गुल हो जाता है और अन्धाकुप्प जो छाता है छाया ही रहता है। जैसे रात हो जाए तो रात ही चलती जाए। या दिन है तो दिन ही दिन अविरत। और हवा चलती है, जैसे रूह आह भरती, सारे में लहराती, करवट बदलती तो चुड़ैल हो जाती, इस पर, उस पर टूटती गिरती"[11]

फ्लैशबैक शैली

जो अतीत में घटित होता है उसे याद कर जब लिखा जाता है उसे फ्लैशबैक शैली कहा जाता है । उदाहरण इस प्रकार है

"उसने बताया दो औरतें थीं हिन्दुस्तान की। एक बूढ़ी और एक डरी। कोई ख़ास ज़रूरत नहीं थी कि हर वक्त उन पर बन्दूक ताने खड़े रहो पर अमला की मर्ज़ी या कानूनी ज़रूरत। उसने बताया कि बन्दूक हमने एक तरफ़ खड़ी कर दी और क्रिकेट पर बात करते। उन्होंने बताया उसने बताया कि एक बार वो गिर पड़ीं और उनके ख़ाविंद उन्हें उठाने उछले तो वो लड़ पड़ीं फ़र्श पर पड़े पड़े, हटो हटो इमरान का छक्का मिस हो जाएगा।"[12]

काव्यात्मक शैली

काव्यात्मक शैली अर्थात वह जो कविता के रूप में लिखी जाती है जिसमें आम भाषा नहीं होती उसमें लय तथा काव्य के अनेक तत्व होते हैं।

"एक वक्त था, कहते हैं, जब सब निर्धारित था, और कोई हेर का फेर नहीं, ऐसा कहा जाता है, माना जाए या नहीं, ये आप हम तय करें। कि कभी ऐसा था कि एक एक इनसान अपनी भूमिका में रचा बसा था और जानता था कि किसके संग क्या सलूक करें। मसलन जापानी जानता था या जानती थी कि सलामी में कमर किस कोण तक झुकाएँ और फ़लाना मोड़ पे अदृश्य हो गया है तो भी कितने पल, जस का तस झुके रहें। बड़ा जानता था कि कहने के पहले बस आँख उठाने भर पर छोटा तपाक उठेगा और आज्ञापालन कर देगा। पेड़ जानता था बूँद गिरी, अब फल पका के गिराओ। इत्यादि।"[13]

संवादात्मक शैली

जहां पर दो व्यक्ति या उससे ज्यादा लोग बात कर रहे होते हैं उसे संवादात्मक शैली कहा जाता है । दो या अधिक पात्रों के बीच हुए वार्तालाप को संवाद कहा जाता है और जब यह लेखन में आता है वह संवादात्मक शैली का रूप ले लेता है। उदाहरण के लिए-

'"अम्मा को उठाओ'।

ऐई, सरसों का तेल तुम कहाँ से लेती हो ?

'अम्मा के कमरे में है, उनसे पूछो'।

गन्ने का रस मेरी जिन में डाल दो।

'अम्मा को दे आओ'।

जिन पियेंगी ?

हा हा हि हि। इतनी मिलावट कि आर्गेनिक लेती हूँ।

'अम्मा मानेंगी'।

गुलदाउदी हमें देते जाओ।"[14]

व्यंग्यात्मक शैली

एक बात कहना लेकिन उसका अर्थ अलग होना व्यंग कहलाता है। उदाहरण-

"विदेशियों को दरगुज़र जानबूझकर किया गया है। वे गोरे हैं। उनकी ले बैठो तो फिर वो ही वो, क्योंकि दुनिया उनकी हो चुकी है। उसे बना वे रहे हैं, बिगाड़ और बनाने का पर्याय वे हैं, बिगाड़ने का बाकी, क्योंकि केन्द्र वो हैं और केन्द्र से मूलकथा तय होती है, बाकी बाकी हैं। पतंग, दशमलव, चाय, शून्य, टंकण, बारूद सब इधर से आये, पर जब 'केन्द्र' में पहुँचे तभी से दुनिया में आए माने गए। सारे रंग बाकियों से आये काले, भूरे, पीले मगर केन्द्र का अ-रंग न-रंग असल रंग मान लिया गया। केन्द्र और बाकी, वे यथार्थ, ये बेमज़ा, बेरंग, बेकद्रा। स्मृति वहीं से, विस्मृति वहीं से। प्राचीन यूनान को जिन्होंने अपनी सोच की धरोहर मान रक्खा था, वे भूल गए उसे, सदियों सदियों, और अरब थे जिन्होंने अपने खज़ाने में उसकी याद संजोयी, वर्ना कौन सा पुनर्जागरण पश्चिम में कभी होता ? पर हुआ और वो केन्द्र में था इसलिये अरब भी बाकी हुए।"[15]

कथावाचक का बीच में आना

उपन्यास में कई जगह कथावाचक भी हस्तक्षेप करती है। उदाहरण-

"रेनबो का नाम आते ही मुझे आना पड़ रहा है। क्योंकि उसे मैंने देखा। ये अगर किसी ने कहा तो मैंने। वैसे मैंने भी नहीं। पर मैं जानता हूँ। क्योंकि उन औरों से ज्यादा मेरी नज़र को सूझती है और बुद्धि को भी। मैं देख लेता हूँ, चुपचाप, कौन आया, क्या बोला, किसके चेहरे पे क्या भाव खिला और रेनबो कहाँ उचका। बशर्ते कि मैं उस पल वहाँ मौजूद हूँ और घटता मेरे सामने है।"[16]

4.5 शिल्प

शिल्प यानी कि एक लेखक अपनी कृति किस तरह गढ़ता है। वह उसे किस प्रकार रखता है। गीतांजलि जी ने अपने उपन्यास रेत समाधि में कुछ अलग प्रकार का शिल्प इस्तेमाल किया है।

गीतांजलि श्री शिल्प बहुत ही अच्छा प्रस्तुत करती है। उनका रेत समाधि उपन्यास यह उन्होंने तीन भागों में विभाजित किया है पीठ धूप और हर सरहद। बीच-बीच में लेखिका ने काव्यात्मक भाषा का प्रयोग कर कई बातों का वर्णन किया है जैसे की बेटियों। बीच-बीच में उन्होंने व्यंग भी किया है। रेत समाधि में एक किस्सा खत्म हो जाए तो दूसरा किस्सा अलग से शुरू होता है।

कथावस्तु की बात की जाए तो गीतांजलि श्री कथानक सरल चलता जाता है एक के बाद एक किस्सा बीच में फ्लैशबैक शैली का प्रयोग किया गया है जहां पर पूर्व घटना के बारे में पता चलता है।

पात्रों का वर्णन इस प्रकार किया गया है कि वह पढ़कर आपको समझ आ जाता है कि पात्र किस तरह के हैं। पात्रों का बहुत ही अच्छी तरीके से वर्णन किया गया है।

रेत समाधि में ज्यादातर संवाद नहीं आए हैं लेकिन कुछ जरूर आए हैं जहां पर तीन से अधिक पात्र बात करते दिखाई नहीं देते हैं और यह स्वाभाविक है क्योंकि उपन्यास में ज्यादातर संवाद नहीं दिखाइए देते हैं।

गीतांजलि श्री रेत समाधि में जिस तरह वर्णन किया है पढ़ने पर लगता है कि वह आपके सामने ही आपके साथ ही हैं।

4.6 प्रासंगिकता

रेत समाधि उपन्यास प्रासंगिक है। रेत समाधि में वृध्दों कि स्थिति , उनका अकेलापन आदि आज भी दिखाई देता है। बच्चे अपने माता-पिता को बूढ़ा होने पर अपने पास नहीं रखना चाहते । वे अपने बच्चों और पत्नी के साथ अकेले रहना पसंद करते हैं जिसकी वजह से मां-बाप खुद को अकेला महसूस करते हैं। अगर बूढ़े मां-बाप के पास पैसा है तभी बच्चे उनका ख्याल रखते हैं वरना नहीं। बुढ़ापे में जहां मां-बाप को अपने बच्चों की जरूरत होती है बच्चे उसी समय मां-बाप का साथ छोड़ देते हैं।

स्त्रियों को आज तक पूरी स्वतंत्रता नहीं मिली। साहित्य में स्त्रीयों के बारे में बहुत सारा लिखा जा रहा है लेकिन अब तक उन्हें अपनी जिंदगी अपने तरीके से जीने को नहीं मिलती। वह जैसा चाहती है वह वैसा नहीं कर सकती। आज तक स्त्रियों पर रोक-टोक वैसी की वैसी ही है जैसे कि शाम होने पर उन्हें घर से बाहर निकलने नहीं दिया जाता , वह अपनी मर्ज़ी के अनुसार कपड़े नहीं पहन सकती।

विभाजन के कारण हुई स्थितियां आज भी वैसी की वैसी ही हैं। विभाजन होने के बाद भी लोग लड़ रहे हैं। विभाजन की वजह से दोनों देशों की स्थितियां बुरी होती

जा रही है जहां पर एक मुल्क दूसरे मुल्क में आने की इजाज़त तक नहीं दे रहा है। मासूम लोगों की जाने जा रही है।

किन्नरों को आज भी लोग उसी दृष्टि से देखते हैं। वे आज कितने आगे बढ़ चुके हैं लेकिन फिर भी उन्हें इस समाज द्वारा अपनाया नहीं जाता। उनको देखते ही लोग डर जाते हैं जैसे कुछ डरावना देख लिया हो।

आज भी इस समाज में पुरुषों को ही निर्णय लेने का हक़ है। स्त्रियां कितनी भी आगे बढ़ें वे हमेशा पुरुषों के पीछे ही रह जाती हैं। उन्हें आगे बढ़ने ही नहीं दिया जाता। पुरूष जिस तरह चाहें उस तरह रहते हैं लेकिन स्त्री अगर अपने तरीके से रहती है तो उसे चरित्रहीन कहा जाता है।

अंधविश्वास जैसे बढ़ता ही जा रहा है। अधंविश्वास के कारण मासूमों को फंसाया जाता है और उनकी जिंदगी नष्ट हो जाती है।

धर्म का सभी गलत फायदा ले रहे हैं। धर्म के नाम पर राजनीति अपना बूरा खेल, खेल रही है जिसमें मासूम फंस जाते हैं। धर्म के कारण अशांति फैल रही है।

आज के समय जहां पर हमें प्रकृति की आवश्यकता है वहीं हम उसे नष्ट करने पर तुले हुए हैं। रेत समाधि में प्रकृति की देखभाल की गई है। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमें प्रकृति को नष्ट होने से बचाना है। जितना हो सके प्रकृति को बचाना है क्योंकि प्रकृति ही हमारी असली संपत्ति है।

आज भी जितना प्यार बेटियां अपने माता-पिता से करतीं हैं उतना बेटा कभी नहीं करता। बेटियां हमेशा अपने माता-पिता के बारे में सोचती हैं। कहा जा सकता है कि इस पन्यास में हमारे समय के सच को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

संदर्भ

1 गीतांजलि श्री, रेत समाधि, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली, 2018 वही, पृ. 39

2 वही, पृ. 21

3 वही, पृ. 203

4 वही, पृ. 225

5 वही, पृ. 251

6 वही, पृ. 36

7 वही, पृ. 342

8 वही, पृ. 343

9 वही, पृ.49

10 वही, पृ.92

11 वही, पृ. 23

12 वही, पृ. 345

13 वही, पृ. 66

14 वही, पृ. 64

15 वही, पृ. 60

16 वही, पृ. 52

पंचम अध्याय

निष्कर्ष

पंचम अध्याय:-निष्कर्ष

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में गीतांजलि श्री द्वारा लिखित 'रेत समाधि' उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन' इस विषय को लेकर शोध कार्य किया गया है जिसके निष्कर्ष कुछ इस तरह हैं-

'रेत समाधि' उपन्यास गीतांजलि श्री द्वारा लिखित है। जिसे 26 अप्रैल 2022 में अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार प्राप्त हुआ है। उसके अंग्रज़ी अनुवाद के लिए जिसे डेज़ी रॉकवेल ने किया है। गीतांजलि श्री मूल रूप से स्त्री समस्या पर लिखती है पर बाकी विषयों पर भी उन्होंने बखूबी लिखा है जिसका एक उदाहरण 'रेत समाधि' है।

‘रेत समाधि’ यह उपन्यास ‘चंदा’ के चंद्रप्रभा’ बनने के सफ़र को दर्शाता है। ‘रेत समाधि’ में विभाजन, किन्नरों के प्रति लोगों का दृष्टिकोण, स्त्री की समस्या, पितृसत्ता, वृद्धों की स्थिति जैसे विषयों का समावेश है जो विषय समाज में आज भी प्रासंगिक हैं। केवल साहित्य ही इस समाज को बदल सकता है। ‘रेत समाधि’ यह उपन्यास आज के समय में लोगों की मानसिकता को समझने के लिए एक उत्कृष्ट कृति है।

‘रेत समाधि’ में मुख्य रूप से जिन विषयों पर ध्यान केंद्रित हुआ है वह है- स्त्रियों की समस्या। पहले से ही स्त्री स्वतंत्रता से रहना चाहती है। लेकिन उसे इस समाज द्वारा स्वतंत्रता नहीं दी जाती। दूसरा है- विभाजन। कहा जाए तो यह उपन्यास मुख्य से रूप से विभाजन पर ही आधारित है। विभाजन की त्रासदी को इस उपन्यास में बखूबी बयान किया गया है। अगला विषय है लोगों का किन्नरों के प्रति दृष्टिकोण जहां पर दिखाई देता है कि किन्नरों के प्रति लोगों का दृष्टिकोण अभी तक नहीं बदला। पितृसत्तात्मक समाज किस तरह स्त्रियों पर हावी है यह भी ‘रेत समाधि में चित्रित हुआ है। वृद्धों के साथ किस तरह से व्यवहार किया जाता है यह 80 साल की अम्मा के माध्यम पता चलता है।

‘रेत समाधि’ उपन्यास की कहानी ‘अम्मा’ के इर्द-गिर्द घूमती है। ‘अम्मा’ और ‘बेटी’ इस उपन्यास के मुख्य पात्र हैं। ‘अम्मा’ का सभी परिवार वालों से मूँह मोड़ लेना और पाकिस्तान जाना यह इस उपन्यास में प्रस्तुत हुआ है। उपन्यास

तीन भागों में विभाजित है जो है ‘पीठ’, ‘धूप’ , ‘हद सरहद’ । तीनों भाग ‘अम्मा’ की स्थितियों को दर्शाते हैं। उपन्यास में चार कहानियां हैं जो ‘अम्मा’ की आप-बीती बताती हैं। ‘अम्मा’ ने अपने पति की मृत्यु के बाद सबसे पीठ की है। सभी परिवार वाले उन्हें उठाने की कोशिश करते हैं लेकिन वह नहीं उठती वह केवल ‘नहीं’ कहती है। ‘पीठ’ नामक अध्याय में ‘अम्मा’ सभी घर वालों से पीठ किए हुए हैं। वह चुप है। किसी से बात नहीं करती है।

वही ‘अम्मा’ ‘धूप’ नामक अध्याय में खिली जाती है। ‘धूप’ अध्याय में ‘अम्मा’ ‘बेटी’ के यहां रहने चली जाती है जहां पर वह अपनी जिंदगी अपने तरीके से जीती है। वहां पर ‘अम्मा’ ‘बेटी’ बन जाती और ‘बेटी’ ‘अम्मा’ बन जाती है। वह ‘रोज़ी’ के साथ अच्छा समय गुज़ारती है।

‘सरहद’ नामक अध्याय में ‘अम्मा’ और ‘बेटी’ पाकिस्तान पहुंचते हैं। पाकिस्तान पहुंचकर ‘अम्मा’ अपने बीते दिनों को याद करती है। पाकिस्तान में जाकर ‘अम्मा’ अपने शौहर ‘अनवर’ से मिलने की ज़िद करती है जो विभाजन के दौरान एक-दूसरे से अलग हो गए थे। एक दिन ‘अम्मा’ ‘अनवर’ से भी मिलती है। वही उन्हें गोली लगती है और उनकी मृत्यु हो जाती है। इसी के साथ उपन्यास का अंत होता है।

‘रेत समाधि’ में कई सारे मुख्य और गौण पात्र हैं। इसी के साथ कई कहानियाँ समानांतर रू से चलती हैं। ‘रेत समाधि’ का कथानक प्रवाहमय है और बहुत ही रोचक है। जैसे-जैसे आप आगे बढ़ते हैं वह मज़ेदार बनता जाता है।

‘रेत समाधि’ उपन्यास में कई प्रकार की समस्याएं आई हैं। संयुक्त परिवारों के टूटने के पीछे के कारण इस उपन्यास में पेश किए गए हैं। पितृसत्ता किस प्रकार स्त्रियों पर हावी है यह ‘बेटे’ के माध्यम से पता चलता है। स्त्रियों की स्थिति समाज में क्या है। उन्हें आज तक स्वतंत्रता नहीं मिली है यह ‘अम्मा’, ‘बेटी’ और ‘बहू’ के माध्यम से पता चलता है। समाज में वृद्धों की स्थिति उनके साथ किस तरह से परिवार वाले पेश आते हैं यह भी इस उपन्यास में उजागर किया गया है। । अंधविश्वास आज भी समाज में प्रचलित है। आज भी लोग उनपर विश्वास रखते हैं। किन्नरों का इस समाज में क्या स्थान है, उसी के साथ लोगों का उनके प्रति क्या दृष्टिकोण है यह ‘रेत समाधि’ उपन्यास में प्रस्तुत हुआ है। धर्म के नाम पर क्या हो रहा है यह ‘रेत समाधि’ में चित्र किया गया है। विभाजन की त्रासदी, विभाजन के कारण उत्पन्न हुई स्थितियां और होने वाली स्थितियों को उपन्यास में उजागर किया गया है।

किसी भी साहित्य के लिए भाषा यह महत्वपूर्ण अंग है। मूल रूप से यह उपन्यास हिंदी भाषा में लिखा गया है जिसमें उर्दू शब्द और अंग्रेज़ी शब्द भी आए हैं। वर्णनात्मक शैली, फ्लैशबैक शैली, काव्यात्मक शैली, संवादात्मक शैली,

व्यंग्यात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली जैसी शैलियों का प्रयोग उपन्यास में किया गया है। कथानक बहुत ही विस्तार पूर्ण है। पात्रों का वर्णन बहुत ही अच्छे तरीके से किया गया है जिसको पढ़ने पर लगता है कि सब आपके समक्ष प्रस्तुत हो रहा है। 'रेत समाधि' यह उपन्यास यथार्थपरक है जिसमें उपन्यासकार ने अपनी कल्पना का भरपूर उपयोग किया गया है। 'रेत समाधि' में जो भी समस्याएं आई हैं वे आज भी देखी जा सकती हैं।

विभाजन का बुरा परिणाम लोगों पर हो रहा है। अभी तक लोग विभाजन के कारण एक दूसरे से नफ़रत करते हैं और वह नफ़रत इतनी बढ़ चुकी है कि एक मुल्क के लोग दुसरे मुल्क के लोगों को वहां आने की इजाज़त तक नहीं देते। वृध्दों की स्थिति आज भी उसी तरह है। उन्हें अपने परिवार वालों द्वारा नकारा जाता है। जिस समय में वृध्दों को अपने परिवार वालों की सख्त ज़रूरत होती है उसी समय उन्हें अकेला छोड़ दिया जाता है। जिस तरह स्त्रियाँ जकड़नों में फंसी हुई हैं उसी तरह 'रेत समाधि' की स्त्रियां भी जकड़नों से बंधी हुई हैं। आज आधुनिक समय में पितृसत्ता हावी होने के कारण स्त्रियों को आगे बढ़ने में परेशानी होती है। आज स्त्रियां पढ़ लिखकर अच्छी नौकरी करने के बावजूद भी उन्हें कोई निर्णय नहीं लेने दिया जाता है सिर्फ़ षुरुष ही निर्णय ले सकते हैं। वे जकड़नों से भागना चाहती हैं। किन्नरों को आज भी इस समाज द्वारा नहीं अपनाया गया है। उनके प्रति लोगों के विचार 'रेत समाधि' में चित्रित होते हैं।

‘रेत समाधि’ उपन्यास पर शोध की अनेक संभावनाएँ हैं। ‘रेत समाधि’ में चित्रित विभाजन की समस्या को लेकर शोध कार्य किया जा सकता है । क्योंकि यह उपन्यास प्रमुख रूप से विभाजन की स्थिति को दर्शाता है।। उसी के साथ ‘रेत समाधि’ की भाषा, शैली एवं शिल्प पर भी विस्तार पूर्ण शोध कार्य हो सकता है । ‘रेत समाधि’ की भाषा शैली एवं शिल्प यह महत्वपूर्ण है और उसकी अनोखी भाषा और शिल्प की वजह से यह उपन्यास प्रसिद्ध हुआ है। कहा जा सकता है कि अनेकानेक संदर्भों में इस उपन्यास पर भविष्य में कार्य किया जा सकता है।

'रेत समाधि' उपन्यास अनेक समसामयिक विषयों को उठाता है। उसका कथानक और उसकी काव्यात्मक भाषा उसे एक अदभूत् रूप प्रदान करती है इसलिए, कहा जा सकता है कि वह संपूर्णता के साथ हमारे सामने आता है और वर्तमान के श्रेष्ठ हिंदी उपन्यासों की पंक्ति में खड़ा हो जाता है।

संदर्भ सूची

संदर्भ सूची

आधार ग्रंथ

१.गीतांजलि श्री, रेत समाधि, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, 2018

सहायक ग्रंथ

२. डॉ. एम.फ़ीरोज़ ख़ान, गीतांजलि श्री कृत रेत समाधि उपन्यास एक मूल्यांकन, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2023

पत्रिकाएं

१.अपूर्व, कार्यकारी संपादक पंकज शर्मा, पाखी, इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसायटी, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश, 2022

२. मधुसूदन आनंद, नया ज्ञानोदय, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2022

३. संजय सहाय, हसं, अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली, 2022

शोध ग्रंथ

१.https://g.co/kgs/4EzehN

अंतराजाल

१. https://hindi.business-standard.com

२. https://www.aryavartsvs.org.in

३. https://vagartha.bharatiyabhashaparishad.org

४. https://m-hindi.webdunia.com

५. https://www.jetir.org

६. https://www.tuahindi.com

७. https://supp.cus.ac

८. https://navbharattimes.indiatimes.com

९. https://sahityapedia.com

१०. https://www.theguardian.com

११. https://thewire.in

१२. https://journalppw.com

१३. https://www.litromagazine.com

१४. https://www.catranslation.org

१५. https://www.apanimaati.com

१६. https://www.jijfmr.

१७. https://www.tu9hindi.com

१८. https://www.rhimrj.co.in

१९. https://samkaleenjanmat.in

२०. https://setumag.com

२१. https://www.the-tls.co.uk

२२. https://ginajournal.com

२३. https://hindigurujee.com

२४. https://studybymind.com

२५. https://amp-bharatdiscovery-org.cdn.ampproject

२६. https://mpgkpdf.com